ISSN 2454-1230

त्रयोदशोऽङ्कः, XIIIth Issue

जनवरी-जून, 2021

January-June 2021

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्कः 13)

अनुक्रमणिका

	प्रबन्ध सम्पादकीय	viii
1.	कबीर के साहित्य एवं श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित कर्मयोग के दोहे एवं श्लोकों का व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन प्रो. हरिहृदय अवस्थी एवं अमर नाथ	1
2.	श्रेष्ठ अध्ययन प्रवृत्ति प्रो. नीलाभ तिवारी एवं अनिल कुमार तिवारी	10
3.	प्रयाजयागः डॉ. शम्भु कुमार झा	13
4.	राजस्थान की नौवें दशक की हिन्दी कविता डॉ. अशोक कुमार शर्मा	21
5.	जैनेन्द्र व्याकरण में संज्ञाविधान डॉ जितेंद्र कुमार	33
6.	पाणिनीय व्याकरण में स्थानिवद्भाव : एक विश्लेषण डा रवि प्रभात एवं सुचेता	38
7.	मनोवैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति एवं क्षेत्र डॉ. आरती शर्मा	42
8.	श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्तित्व डॉ. सुरेन्द्र महतो एवं डा. सुनीलकुमारशर्मा	47
9.	अधिगमाकलनम् डा. इक्कुर्ति वेङ्कटेश्वर्लुः	54
10.	वैकल्पिक शिक्षा: प्रकृति, व्यूह रचनाएँ, संभावनाएं और विकास का परिप्रेक्ष्य डा. अजय कुमार	60
11.	माध्यमिकविद्यार्थिनां परास्मृतेः विश्लेषणात्मकमध्ययनम् डा. नितिन कुमार जैन एवं रेनु	71
12.	भारतीयदर्शने मूल्यानि डॉ. चक्रधरमेहेरः	80

शिक्षाप्रियदर्शिनी
अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका, त्रयोदशोऽङ्कः, जनवरी-जून, 2021, ISSN : 2454-1230

8.

श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्तित्व

डॉ. सुरेन्द्र महतो, सहायक आचार्य
डा. सुनीलकुमारशर्मा, सहायक आचार्य
शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

शोधसारांश

व्यक्तित्व से व्यक्ति की समाज में पहचान होती है। व्यक्तित्व व्यक्ति के समग्र गुण और दोषों को अभिव्यक्त करता है। पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इसके कई भेद किये गये हैं जो विभिन्न तर्कों से सम्पुष्ट है। शिक्षा मनोविज्ञान में भी व्यक्तित्व को प्रमुख स्थान दिया जाता है। जबकि भारतीय वाङ्मय में अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्तित्व के ही नहीं मनोविज्ञान के विभिन्न तथ्यों के विषय में गम्भीरतापूर्वक चिन्तन किया गया है। जिनमें से श्रीमद्भगवद्गीता को सम्पूर्ण विश्व साहित्य में अग्रगण्य स्थान प्राप्त है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी शिक्षा मनोविज्ञान के विभिन्न तथ्य जैसे - बुद्धि, व्यक्तित्व, सीखना, स्मृति, विस्मृति, ध्यान, स्वप्न, जिज्ञासा इत्यादि प्राप्त होते है। इनमें से 'श्रीमद्भगमद्गीता में व्यक्तित्व तथा इसके प्रकारों' का विश्लेषण किया गया है जिसमें मुख्य रूप से सात्विक, राजस एवं तामस गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के तीन प्रकार की व्याख्या प्राप्त होती है जिसे व्यक्ति के विभिन्न आहार-व्यवहार के आधार पर सोदाहरण व्याख्या इस पत्र में की गयी है।

विषय प्रवेश

मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु एवं चिन्तनशील प्राणी है। जिज्ञासा पूर्ति के लिए वे इधर-उधर भ्रमण करते रहे हैं परिणामस्वरूप भोजन संग्रह करने से प्रारम्भ कर चाँद-तारों तक पहुँच बना लिये हैं। मानव सृष्टि की सभी प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान है अर्थात् यूँ कह सकते हैं कि बुद्धि ही एक ऐसा विशिष्ट तत्त्व मानव में अन्तर्निहित है जिसके कारण उसका व्यक्तित्व उन्हें एक दूसरे से पृथक करता है। कहा भी गया है-''बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।'' अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति विकास का परिचायक है ठीक इसी प्रकार किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास का परिचायक वहाँ की शिक्षा व्यवस्था है। जो उनके आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक उन्नति को गति प्रदान करती है। अर्थात् शिक्षा की आवश्यकता एवं सार्थकता स्वतः सिद्ध है। सभी क्षेत्रें में विकास अनवरत गति से चल रहा है परिणामतः शिक्षा प्रक्रिया भी इस से अछूता नही है। शिक्षा शब्द संज्ञा एवं क्रिया दोनों रूपों में प्रयुक्त होती है। शिक्षा जब संज्ञा के रूप में प्रयोग किया जाता है तो उसे एक विषय के रूप में स्वीकार किया जाता है जो अभी विकासशील है। अपितु जब यह प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है तो यह पूर्व विकसित रूप में हमारे समक्ष है। यहाँ हम शिक्षा का एक विषय के रूप में अध्ययन करेंगे। शिक्षा अथवा शिक्षाशास्त्र एक नवीन संकल्पना है जो शिक्षा प्रक्रिया के विविध क्षेत्रें सीखना-सिखाना, मनोवैज्ञानिक,

ISSN 2454-1230

नवदशोऽङ्कः, XIXth Issue

जनवरी - जून , 2024

January - June, 2024

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

संरक्षकः

प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

प्रबन्धसम्पादकौ

प्रो. अंजूसेठः

श्री अरूणकुमारमंगलः (अधिवक्ता)

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

प्रबन्ध सम्पादकीय

शुभकामनासन्देश:

शिक्षाप्रियदर्शिनी **के गत अंक- 18 की समीक्षा**

1. तिङर्थनिरूपणम् .... डॉ. सुधाकरमिश्र:
2. व्याकरणशास्त्रस्य संक्षिप्तेतिहास: .... डॉ. शिवदत्त आर्य:
3. **शिक्षाक्षेत्रे** ऐतिहासिकानुसन्धानोपागम: .... डॉ. आरती शर्मा
4. दार्शनिकानुसन्धानोपागम: .... डॉ. सुनीलकुमारशर्मा
5. **दर्शनान्तरेषु** पदार्थतत्त्वनिर्वचनम् .... डॉ. जगत् ज्योतिपात्र:
6. उपमास्वरूपविमर्श: .... डॉ. सौरभदुबे
7. **मानवजीवने आत्मानुशासनाय संस्कृतस्य उपादेयता** .... डॉ. प्रज्ञा
8. अप्पयदीक्षितस्य व्याकरणवैभवम् .... मनोजकुमारगुप्ता
9. महाभाष्यप्रदीपव्याख्यातृपरिचय: .... शङ्खशुभ्रगच्छित:
10. बृहत्संहितायां **निरूपितो** भूकम्पविचार: .... दिवाकरशर्मा
11. **मनुस्मृतौ वर्णिता: दण्डस्य प्रकारा:** .... ध्वनिका सूद
12. व्यक्तित्वपक्षेषु **रुचे: महत्त्वम् उपयोगश्च** .... ज्योतिनाथ:
13. पूर्वकारिकोक्तरीत्या अग्निमुखविधि: **एकम्**– परिशीलनम् .... श्री विष्णुदास देशपाण्डे
14. सिद्धान्तज्यौतिषे **अक्षक्षेत्राणां महत्त्वम्** .... गिरीशभट्ट: बि.
15. **अधिगम व्यवहार सम्बद्ध उपकरण निर्माण एवं अध्ययन** .... डॉ. नितिन कुमार जैन एवं दुर्गेश त्रिपाठी
16. **विश्व में वैदिक ज्ञान 'योग' का नवप्रवर्तनीय उपयोग** .... डॉ. विकास शर्मा
17. **आधिदैविक एवं** आधिभौतिक **दु:खों के याज्ञिक उपचार** .... ड़ॉ. वेणुधर दाश
18. **महाभारत में पर्यावरण चेतना** .... नकुल कुमार साहु
19. **स्वास्थ रहने के लिए प्राणायाम की** प्रासंगिकता **(योगशास्त्र के अनुसार अभ्यास)** .... दिवाकर शर्मा
20. **भारतीय संस्कृति में यज्ञ का महत्त्व** .... कणिका
21. **भारतीय ज्ञान परम्परा का वैविध्य** .... डा. वीणा मिश्रा
22. Efficacy of multiple intelligence-based instruction models for school teaching .... Prof. K. Ravishankar Menon, Dr Suneel Kumar Sharma & Sanjay Bhardwaj
23. Importance of Mitāhār in Yoga Philosophy .... Prof. Subash Ch. Dash & Sagar Mantry

शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक- 18 की समीक्षा

डॉ. सुरेन्द्र महतो
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ
श्री देवेश प्रसाद सकलानी
शोधछात्र-शिक्षा
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-16

शिक्षाप्रियदर्शिनी, जुलाई-दिसम्बर 2023 - XVIII वाँ अंक में प्रकाशित कुल 21 आलेखों में से पाँच पत्र संस्कृत भाषा में, चौदह पत्र हिन्दी भाषा में तथा दो पत्र अंग्रेजी में प्रकाशित हैं। संस्कृत भाषा में प्रकाशित पाँच पत्रों में दो ज्योतिषशास्त्र, एक व्याकरणशास्त्र, एक धर्मशास्त्र तथा एक साहित्य (अलंकार) शास्त्र से सम्बन्धित है।

हिन्दी भाषा में प्रकाशित आलेखों (14) में से वेद सम्बन्धित चार (4) उपनिषद् (गीता) - 3, पुराण सम्बन्धित- 2, कालिदास साहित्य (मनोविज्ञान)- 1, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020-2, हिन्दी भाषा साहित्य-2, अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित दो आलेखों में एक वैदिककाल में नारी तथा दूसरा पोषण अर्थात् आयुर्वेद से सम्बन्धित है। लेखक के विभाग के आधार पर दस आलेख शोधच्छात्रों द्वारा, दस प्राध्यापकों द्वारा तथा दो स्वतन्त्र लेखकों द्वारा लिखित है। जिनका विशिष्ट विवरण अनुक्रमणिका के आधार पर इस प्रकार है -

सर्वप्रथम श्री देवज्योतिकुण्डु शोधच्छात्र वैदिक दर्शन विभाग संस्कृत विद्याधर्म विज्ञान संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा **'ग्रहान्तिग्रह- लक्षणबन्धस्वरूपं ततो मोक्षोयायश्च'** नामक शोधालेख बृहदारण्यकोपनिषद् पर आधारित है। इसके द्वितीय ब्रह्मण में **'ग्रहान्तिग्रहबन्धन'** विषय पर चर्चा की गई है तथा चतुर्थ ब्राह्मण में मोक्ष के उपाय तथा पञ्च ब्रह्मण में मोक्ष के साधन के रूप में सन्यास का निरूपण प्राप्त होता है। इसका निरूपण करते समय लेखक ने सर्वप्रथम उपक्रम में बृहदारण्यक उपनिषद् के स्वरूप का वर्णन किया है पुनः ग्रहातिग्रहस्वरूप तत्त्वज्ञ देहावसान विचार, आत्मा की व्यापकता के विवेचन क्रम में अन्य सन्दर्भों केनोपनिषद् एवं आत्म का स्वरूप। प्रश्नोषनिषद् आदि सन्दर्भों को भी उद्धृत किया है अन्त में उपसंहार में सम्पूर्ण शोध पत्र का निष्कर्ष लिखा है।

श्री बुलेटमण्डल सहायक अध्यापक संस्कृत विभाग डायमण्ड हारवार महिला विश्वविद्यालय (प. बंगाल) द्वारा लिखित शोध आलेख का शीर्षक **महाभाष्यकार दिशा** प्रत्ययाधिकारस्थानां **योगविभागानां समोक्षा है।** जिसमें शोधसार, कूटशब्द, उपोद्घात, विषयवस्तु, निष्कर्ष तथा सन्दर्भग्रन्थ की सूची दी गई है। इस पत्र का मुख्य ध्येय प्रत्ययाधिकारस्थ सूत्रों का योग विभाग द्वारा शब्द की सिद्धि अर्थात् इष्टासिद्धि के विषय में महाभाष्यकार के मतों उपस्थापित किया का गया हैं। **योगविभागाद् इष्टसिद्धिः** इस परिभाषा के सन्दर्भ देते हुए कहते हैं कि जिन शब्दों की सिद्धि की प्रक्रिया पाणिनी सूत्रों से सम्भव नहीं हैं वहाँ योग-विभाग नामक उपाय का आश्रय लिया जाता है। उदाहरण के रूप में विंशतित्रिंशभ्दया ड्वुन्न संज्ञायाम् तत्र च दीयते कार्यं भवतत्। तौ सत्, लृट शेषे च, युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च, तस्मिन्नणिच युष्माकास्माकौ तथा किमिदम्भ्यां वो घः सूत्रों के योग-विभाग द्वारा समाधान किस प्रकार किया जाता है। उदाहरणपूर्वक विवेचित है।

उच्चारण शिक्षण/संशोधनकौशलम्

Pronunciation Teaching/Modification skill
Dr- Surendra Mahto
Assistant Professor (Faculty of Education)
SLBSNSU – New Delhi

"किमिदमुच्चारणं नामेति?' विवक्षाजनितेन प्रयत्नेन कोष्ठस्य वायो: प्रेरितस्य कण्ठताल्वादिप्रतिपाताद् वर्णाभिव्यक्तिरिति।" अर्थात् उच्चारणं विवक्षाजनिततप्रयत्नम् इति भाष्यकारस्य अभिप्राय:। शिक्षापरिभाषाक्रमे प्राप्यते 'स्वरवर्णाद्युच्चारणं यत्र शिक्षते सा शिक्षा' । उच्चारणशब्दस्य: निष्पत्ति: उद् + चर् + णिच् + ल्युट्[2] पूर्वकं भवति। अर्थात् वाचनं भाषणं कथनं प्रकटीकरणं वा। भाषाया: रूपद्वयं प्राप्यते लिखितमौखीकि च। मौखिकियां भाषायाम् अभिव्यक्ते: प्रभाव: उच्चारणेन ज्ञायते। येन परस्परभावानां ग्रहणाभिव्यक्तिं सम्पाद्येत । पुरा भारतीयपरिप्रेक्ष्ये शिक्षा मौखिकी एव प्रचलिता आसीत् । तत्र उच्चारण विषये विशेषध्यानं दीयते स्म । अस्य महत्त्वं पाणिनीय शिक्षायां इत्थं प्रतिपादितम्-

मन्त्रो हीन: स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
सवाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रु: स्वरतोपऽराधात् ।।52।।[3]

अर्थात् यदा स्वरं वर्णं वा विकृतं कृत्वा कस्यापि मन्त्रस्य अशुद्धोच्चारणं क्रियते तदा सा अशुद्धा वाणी कार्यसिद्धि-अर्थकृतं यज्ञं, स्वयं यजमानं तथैव नस्यति यथैव स्वरं विकृतकरणे इन्द्रस्य शत्रु: वृत्तासुर: मारितम्। अत्र स्वरापराधस्य वर्णनं विहितम्। तत: महर्षिणापाणिनिनोक्तं यच्छुद्धतापूर्वकं वर्णानाम् उच्चारणेनेहलोके सम्मानस्तु पुरोभवत्येव ब्रह्मलोकेऽपि तावत् प्रतिष्ठा प्रतिपाद्यते –

व्याघ्री यथा हरेतपुत्रान्दंष्ट्राभ्यां न च पीडयेत्।
भीतापतनभेदाभ्यां तद्वर्णान्प्रयोजयेत ।।25।।
एवं वर्णा: प्रयोक्तव्या नाऽव्यक्ता न च पीडिता:।
सम्यग्वर्णप्रयोगेण ब्रह्मलोके महीयते।।31।।
सुतीर्थादागतं व्यक्तं स्वाध्यायं सुव्यवस्थितम् ।
सुस्वरेण सुवक्त्रेण प्रयुक्तं ब्रह्मराजते।।5।।[4]

अर्थात् वर्णानाम् उच्चारणं यथा विधं कर्तव्यं येन वर्णसमुदाय रूप शब्द:, पदसमुदाय रूप आकांक्षायोग्यतासन्निधिपूर्वकं च सार्थकवाक्यं भाषाया: अर्थबोधकश्च एकक: इति। अशुद्धोच्चारणम् अल्पज्ञताया:, अयोग्यताया:, असभ्यतायाश्च परिचायकं भवति। उपरि शुद्धाशुद्धोच्चारणं विषये वर्णितम् । वर्ण: अक्षरो वा ध्वनिसंकेतरूपम्। यथा ध्वनि भवति संस्कृत भाषायां तथैव लीपि संकेत: । इयमेव वैज्ञानिकता अस्ति संस्कृत भाषाया: । वर्णपरिवर्तनेन विपर्ययेन वा शब्दस्य वाक्यस्य वा अर्थ: स्वत: परिवर्तनं भवति। अनेन वक्तृणां श्रोतृणां च उद्देश्यपूर्ति: न सम्भवति। वर्णस्य पदस्य वाक्यस्य वा शुद्धोच्चारणम् आवश्यकम्। एतदर्थं उच्चारणशिक्षणम् अनिवार्यम् । येन छात्राध्यापका: शुद्धोच्चारणस्य महत्वं ज्ञात्वा तस्य दैनिकजीवने कक्षा कक्षे वा प्रयोक्तुं समर्थ: भवेत। शुद्धोच्चारणं कथं कारयेत एतद् चिन्तनीयम्। विद्यार्थिन: प्रायश: कुसंस्कारवशाद् (परिवार:, क्षेत्रम्, मातृभाषा, संसर्ग:, अंगविशेषदोषेनवा) प्रामाणिक शब्दस्य वर्णस्य वा अशुद्धोच्चारणं कुर्वन्ति। यथा- सकारस्य शकारत्वेन, षकारत्वेन, व कारस्य बकारत्वेनादय: । अत्र अध्यापकानां कृते विशिष्यावधानस्य कौशलस्य वा आवश्यकता प्रतीयते। येन विद्यार्थिणाम् उच्चारणदोषाणाम् अपाकरणं शुद्धोच्चारणस्य च ज्ञानं कारयेत। अत: उच्चारणकौशलस्य उच्चारणसंशोधनकौशलस्य वा ज्ञानं प्रशिक्षु ख्र अध्यापकानां कृते महत्वपूर्णम्।

भारतीयशिक्षाव्यवस्थायां शिक्षणप्रशिक्षणं पुराकाले अनौपचारिकरूपेण एव प्रचलितम् आसीत् जना: वदन्ति। यदि एतादृशी व्यवस्था आसीत तर्हि शिक्षाग्रन्थानां क्रम: कथं प्राप्यते। यथा-ऋकप्रतिशाख्य आरभ्य पाणिनि याज्ञयवल्य नारदप्रभृत: । आधुनिकापाश्चात्यो वा शिक्षणप्रशिक्षणसन्दर्भे सूक्ष्मशिक्षणस्य विशिष्टं महत्वम् अनुभूयते शिक्षणशास्त्रीभि:। सूक्ष्मशिक्षण शिक्षकेभ्य: स्व प्रभावीशिक्षणाय शिक्षणकौशलविकासाय च अवसरं प्रयच्छति। यत्र शिक्षका: क्रमेण प्रत्येकस्य शिक्षणकौशलस्य विशिष्टनिर्मितपरिस्थितौ निर्देशकस्य निर्देशने शिक्षणपुनर्शिक्षणाभ्यासेन कौशलविशेषस्य समृद्धिं प्राप्नुवन्ति । अस्या: विधाया: विकास: अमेरिकाया: स्टेनफोर्डविश्वविद्यालये 1961 तमे खीष्टाब्दे कीथएचीसन-रावर्टवुश-डी. डवल्यु. एलन महदयै: सम्पादितम् । सिद्धान्तोऽयं स्कीनरमहोदयस्य क्रियाप्रसूत अनुबन्धनस्य पृष्ठपोषणमनुसरति। अत्रापि शिक्षक: विशिष्टकौशलविकासाय- कमपि पाठं स्वीकृत्य योजनानिर्मातिशिक्षण/अभ्यास: वा करोति-पृष्टपोषणमाप्नोति-पुनर्योजनानिर्माति-पुन:शिक्षणं करोति पुन: पृष्टपोषणमाप्नोति क्रम: ऐष: कौशलसमृद्धिपर्यन्तं प्रचलति (PTF-R) । यथा

चक्रेऽस्मिन् केचन समूहा: षट्सु क्रियासु प्रत्येकक्रियायां 6/5 निमेषा: स्वीकुर्वन्ति अनेन योग: भवति 36/30 निमेषा: । परन्तु प्रथम योजना निर्माणे प्रकरणचयने घटकाभिज्ञाने सामग्रीणामन्वेषणे समयोऽपेक्षते । एतर्थं उपरि प्रदत्त चक्रे प्रथमयोजनाया: कृते समय नावंटितम् ।

एषा क्रिया शिक्षकसम्बन्धिता वर्तते। निष्कर्षत: सूक्ष्मशिक्षण विषये कथितुं शक्यते-"शिक्षक: शिक्षक शिक्षकाय निश्चित अल्पसमयावधौ विशिष्टकौशलविकासाय नीर्मित परिस्थितौ कृतप्रयास: सूक्ष्मशिक्षणमभिधीयते"।

मनसि प्रश्न: उदेति यत् कति शिक्षण कौशलानि सम्पादितानि शिक्षण शास्त्रीभि:? विषयेऽस्मिन् एकस्य उत्तरस्य अभाव: तथैव, यथा- शिक्षणप्रणाली- पद्धति:- विधि:- प्रविधि:- रणनीति: तकनीकी सूत्रादय: । तथापि-सर्वप्रथम: एलनरायनमहोदयाभ्यां चतुर्दशशिक्षणकौशलानां सूची: प्रतिपादितम्। यथा–

(i). उद्दीपनभिन्नता (stimulus variation)
(ii). विन्यासप्रेरणा (Set Induction)
(iii). समीपता/ सामीप्यं (closer)
(iv). मौनम् अशाब्दिकसंकेत: (Silence and Nonverbal cues)
(v). पुनर्बलनम् (Reinforcement)
(vi). प्रश्नकरणम् (Asking Questions)
(vii). अन्वेषीप्रश्न: (Probing Questions)
(viii). विकेन्द्रीयप्रश्न: (Divergent Questions)
(ix). प्रतिच्छित/स्वीकृत व्यवहार: (Recognition/ Attending Behaviour)
(x). दृष्टान्तप्रदानम् (Illustrating)
(xi). व्याख्यानम् (lecturing)
(xii). उच्चस्तरीयप्रश्ना: (Higher order Questions)
(xiii). योजितपुनरावृत्ति: (Planed Repetition)
(xiv). विचार/ सम्प्रेषणपूर्णता (Views or Completeness of Communication)[5]

यद्यपि भारतीय परिप्रेक्ष्ये डा. वी. के. पासी महोदयै: त्रयोदश (13) कौशलानां सूची: प्रतिपादितम् । यथा –

1. अनुदेशनोद्देश्यानां लेखनम् (Writing Instructional objectives)
2. पाठप्रस्तावना (Introduction of lesson)
3. प्रश्नानां प्रवाहशीलता (Fluency of Questioning)
4. अन्वेषीप्रश्न: (Probing Questions)
5. व्याख्या (Explanation)
6. दृष्टान्तप्रदानम् (Illustrating)
7. उद्दीपनभिन्नता (Stimulus Variation)
8. मौनम् अशाब्दिकश्च अन्त:क्रिया (Silence - Non &Verbal cues)
9. पुनर्बलनम् (Reinforcement)
10. छात्रसहभागप्रोत्साहनम् (Increasing Student participation)
11. श्यामपटप्रयोग: (Use of Black/White board)
12. सामीप्यम् (Achieving Closure)
13. व्यवहाराभिज्ञानम् (Attending Behaviour) इति[6]

भारतीयपाश्चात्यानाम् आधुनिकशिक्षणशास्त्रीभि प्रतिपादितं भाषाशिक्षणकौशलसम्बन्धितप्रमुखकौशलेषु (श्रवणं-वाचनं (भाषणम्)-पठन-लेखनम्) एवं कौशलमपि न सम्मेलितम् । मानक/शास्त्रीय भाषाशिक्षणाय श्रवणवाचनपठनलेखन (LSRW) कौशलानां संवर्धनमपि आवश्यकम्। आवश्यकतामीयमनुभूय उच्चारणं/ उच्चारणसंशोधनं वा (Pronunciation/Pronunciation modification) वाचनं/ पठनं (Recitation) लेखनं (अनुलेख: सुलेख: प्रतिलेख: श्रुतलेख: रचना वा) संयोजनम आवश्यकम। यदि लेखनं Writing (Post script, Calligraphy, Transcript, Direction, composing) श्यामपटप्रयोगं अन्तर्भाविनापि भारतीय परिप्रेक्ष्ये पंचदश (15) पाश्चात्य परिप्रेक्ष्ये च षोडश (16) संख्यापरिमितं भवितव्यम्।

भाषा-अध्यापकानां कृते मुख्यरूपेण उच्चारणं/उच्चारणसंशोधनम् , वाचन/पठन (Recitation) कौशलस्य ज्ञानम् अपेक्षितम्। विशिष्टरूपेण द्वितीयभाषा अथवा तृतीयभाषा अध्यापकानां कृते अत्यावश्यकम् सम्प्रति उच्चारण/उच्चारणसंशोधन कौशलसम्बद्ध गुणदोषा: विविच्यते। पाणिनीय शिक्षायां उत्तमपाठकानां गुणान इत्थं परिभाषितम्-

माधुर्यमक्षरव्यक्ति: पदच्छेदस्तु सुस्वर: ।
धैर्यं लय समर्थं च षडेते पाठका: गुणा: ।।

अर्थात् अध्यापका: माधुर्यस्वरेण स्पष्ट अक्षराणामाभिव्यक्ति:, पदच्छेदपूर्वकं, उचितस्वरेण, धैर्यपूर्वकं, उचितलयेन (छन्दानुगुणं) समर्थपूर्वकं पाठं (गद्यं, पद्यं सम्वादं वा) विद्यार्थिनां सम्मुखे उदाहरणं प्रस्तुवन्ति। अनेनानुकरणेन विद्यार्थिन: पाठं पठितुं, पदानां वर्णानां वा सम्यक् उच्चारणे समर्था: भविष्यन्ति । यदि अध्यापकेषु अशुद्धोच्चारणस्य कारणानां बोधो: स्यात् तर्हि ते विद्यार्थिनां जायमानानाम् अशुद्धोच्चारणानाम् अपाकर्तुं शुद्धोच्चारणानां कृते यत्नं करिष्यन्ति । पाणिनीय शिक्षायां पाठकानां दोषान् इत्थं परिगणितं वर्तते। -

गीती शीघ्री शिर:कम्पी तथा लिखितपाठक:।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमा: ।।32।।
शंकितं भीत मुद्धृष्टमव्यक्तमनुनासिकम् ।।
काकस्वरं शिरसिगतं तथा स्थान विवर्जितम् ।।34।।
उपांशु दष्टं त्वरितं निरस्तं विलम्बितं गदगदितं प्रगीतम् ।
निष्पीडितं ग्रस्तपदाक्षरं च वदेन्न दीनं न तु सामुनास्यम् ।।35।।[8]

अत्र पाठकानां दोषानां विषये उल्लेख: वर्तते। संस्कृतभाषायामक्षरध्वनयो: हि विनिश्चिता: सन्ति । तदुच्चारणस्थानमपि च सुनिशिचितानि वर्तते। अशुद्धध्वन्युच्चारणात् शब्दोच्चारणमपि अशुद्धिं प्राप्नोति। कर्हिचित उदात्तानुदात्तस्वरितानां ह्रस्वदीर्घादीनांचोच्चारणे भ्रमवशात्तथाविधाऽशुद्धयो जायते। एतदर्थं भाव्यमानानामध्यापकानां कृते वर्णानां तदुच्चारणप्रक्रियाणां च बोधार्थम् उच्चारणसंशोधनकौशलस्य ज्ञानम् अनिवार्यम् ।

उच्चारणसंशोधनकौशलस्य घटकानि तत्त्वानि वा विषये चिन्तनमुद्दिश्य हिन्दीभाषायां पद्यं साररूपे मया पूर्वे लिखितम् । यथा-

अक्षरव्यक्ति उचितगति मुद्राशैली बल विराम् ।
प्रभावी शब्दोच्चारण स्वर माधुर्य दृष्टि विराम ।।
दुर्बलदृष्टि, ऊँचासुनना तुतलाना हकलाना थकना।
मन्दबुद्धि निराशा डरना क्रोधझिझक से सदैव बचना ।।

सूक्ष्मशिक्षणे कौशलविकासक्रमे सर्वप्रथम सम्बद्धकौशलस्य घटकानां-तत्वानां वा चयनं भवति, येन अध्यापक: तान् अपेक्षितानापेक्षितान् तत्वान् स्वकौशलविकासावसरे दत्तावधाना: भवेयु: । भिन्न-भिन्न कौशलस्य तत्सम्बद्ध भिन्न- भिन्न घटक: तत्वानि वा भवन्ति । तदनुगुणमेव तत्-तत् कौशलविकास: संभवति।

उच्चारणसंशोधन कौशलविकासाय एता: घटका-तत्वानि वा भवितुं शक्यन्ते। यथा-

"अवधानमभिज्ञानम् अंकनं शोधनं तथा।
तकनीक्या प्रयोगेण उच्चारणे शुद्धयागता।।
आदर्शोच्चारणाभ्यास: अन्तेवासी सहायता।
विच्छेद-विग्रहादीनां सामाग्रिणाम् उपयोगिता ।।"

1. अवधानम्
2. अभिज्ञानम्
3. अंकनम्
4. आशोधनम्
5. आदर्शोच्चारणम्

|| ओ३म् ||

'न तच्छस्त्रैर्न
नागेन्द्रैर्न हयैर्न पदातिभिः।
कार्यं संसिद्धिमभ्येति
यथा बुद्ध्या प्रसाधितम्।'

(पंचतंत्र)

कष्टेन हि गुणग्रामं
प्रगुणी कुरुते मुनिः।
ममता राक्षसी सर्वं भक्षयत्येकहेलया॥

(अध्यात्मसार - 08/03)

RNI No. : DELSAN/2011/386[illegible] ISSN 2321 - 4937 DL(E)-20/5534/2024-26

Posting Date.:
4-5, 19-20 of Every Month

सत्यनिष्ठा जयेल्लेखनी निर्भया

संस्कृत - संवादः

पाक्षिकं समाचारपत्रम्

संपादकीयकार्यालयः ए-२/३२, वजीराबाद मार्गः, भजनपुरा, देहली-११००५३, दूरभाषः ९३११०८६७५१

ई-मेलः sanskritsamvad@gmail.com वेबसाइटः www.sanskritsamvad.com

मूल्यम्-रू. १०/-

|| ओ३म् ||

त्यक्त्वा धर्मं च लोभं च
मोहं चोद्यममास्थिता।
युध्यध्वमनहङ्कारा
यतो धर्मस्ततो जयः॥

(महाभारत, भीष्म पर्व - 21/11)

रङ्कं करोति राजानं राजानं
रङ्कमेव च।
धनिनं निर्धनं चैव निर्धनं
धनिनं विधिः ॥ चाणक्यनीति)

मिथिला की लोक-संस्कृति

डॉ. राय एवं महतो

इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी अर्थ में प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता। सर्वाधिकार लेखक के अधीन है।

प्रकाशक :
अभिषेक प्रकाशन
सी-30, द्वितीय तल, न्यू मोती नगर, नई दिल्ली-110015
ऑफिस : 011-46510739, मो. : 9811167357, 8368127189
ई-मेल : abhishekprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2019

© लेखक

ISBN : 978-81-8390-320-2

मूल्य : 800/-

अक्षरसंयोजक :
ए-वन ग्राफिक्स
सी-30, द्वितीय तल, न्यू मोती नगर, नई दिल्ली-15
मो. : 9811167357, 8368127189

मुद्रक :
आर. आर. प्रिण्टर्स, दिल्ली-110053

MITHILA KI LOK-SANSKRITI (Culture)
by Ray-Mahato
Price : 800/-

डॉ. यदुनन्दन राय

जन्म : 01.01.1948 ई.

स्थान : सोनपताही, मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच. डी. (हिन्दी)।

सेवानिवृत्त शिक्षक (बिहार सरकार) 2007

आचार्य धर्मशास्त्र-2015

संगीत प्रभाकर-2016

सम्प्रति : स्वतन्त्र अध्ययन-अध्यापन

डॉ. सुरेन्द्र महतो

जन्म : 05.02.1973 ई.

स्थान : धर्मडीहा, मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : पी.जी.-(संस्कृत, हिन्दी, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र एवं शिक्षाशास्त्र) पी-एच.डी. (संस्कृत एवं शिक्षाशास्त्र)।

सम्प्रति : सहायक आचार्य (शिक्षाशास्त्र), श्री ला. ब. शा. रा. सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली-16

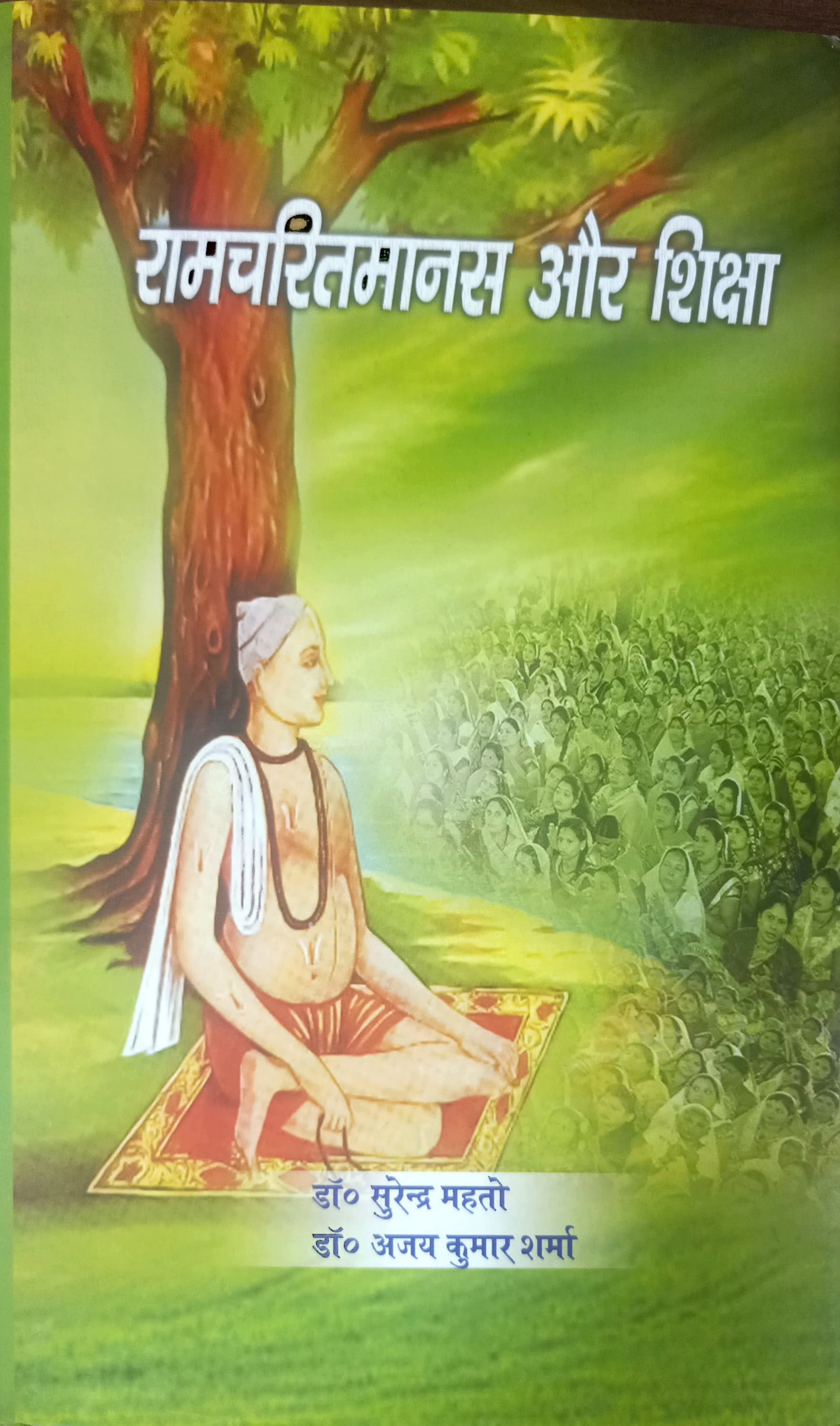

रामचरितमानस और शिक्षा

डॉ० सुरेन्द्र महतो
डॉ० अजय कुमार शर्मा

© प्रकाशकाधीन

ISBN : 978-81-952904-4-4

प्रकाशन वर्ष : २०२२ ई.

मूल्य : रु० ५००/-

प्रकाशक :
अभ्युदय प्रकाशन
C-2/3 विजय इन्क्लेव
पालम-डाबड़ी मार्ग
नई दिल्ली- 110045
9013920832, 9818247813
abhyuday002@gmail.com

डॉ०सुरेन्द्र महतो
असिस्टेंट प्रोफेसर

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय (केन्द्रीयविश्वविद्यालय), नईदिल्ली
जन्म : 05 फरवरी 1973, धर्मडीहा, मधुबनी, बिहार
शिक्षा : ललितनारायणमिथिलाविश्वविद्यालय, दरभंगा कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृतविश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय (केन्द्रीयविश्वविद्यालय), नई दिल्ली एवं चौधरीचरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
विजिटिंगफैकल्टी : मेवारविश्वविद्यालय, राजस्थान, सिंहानियाविश्वविद्यालय, राजस्थान, वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, उत्तरप्रदेश
पूर्वप्रकाशितपुस्तकें : मिथिलाकीलोकसंस्कृति (2019), संस्कृतप्रवेशिका (2017), कोविदानंदविमर्श (2005) 40+ आलेख एवं शोधपत्र राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोधपत्रिकाओं में प्रकाशित।

डॉ० अजय कुमार शर्मा

शिक्षक, ऐमिटी इंटरनैशनल स्कूल– नौएडा
जन्म : 1970, उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर ज़िले के रूपवास में।
शिक्षा : चौधरीचरण सिंह विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी नैशनल ओपेन यूनीवर्सिटी नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन ओपेन यूनीवर्सिटी इलाहाबाद–उत्तर प्रदेश, मेवाड़ यूनीवर्सिटी– राजस्थान।
शिक्षण अनुभव : न्यू आदर्श पब्लिक स्कूल–लोनी गाज़ियाबाद में लगभग छः वर्ष तक अध्यापन। विबग्योर इंटरनैशनल स्कूल, पिलखुवा में लगभग दो वर्ष तक अध्यापन, डी0एल0एफ0– राजेंद्रनगर– साहिबाबाद– गाज़ियाबाद में तीन वर्ष तक अध्यापन, जेनेसिस ग्लोबल स्कूल– नौएडा में पाँच वर्ष तक अध्यापन कार्य किया। इन दिनों ऐमिटी इंटरनैशनल स्कूल– नौएडा में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।
अनेक राष्ट्रीय सेमिनार, वेबिनार, कार्यशालाओं में शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं।
पुरस्कार : "हिंदी शिक्षण में उत्कृष्ट योगदान" (2016) हेतु पुरस्कृत किया गया।

॥ ओ३म् ॥

'न तच्छस्त्रैर्न
नागेन्द्रैर्न हयैर्न पदातिभिः।
कार्यं संसिद्धिमभ्येति
यथा बुद्धया प्रसाधितम्।'

(पंचतंत्र)

कष्टेन हि गुणग्रामं
प्रगुणी कुरुते मुनिः।
ममता राक्षसी सर्वं भक्षयत्येकहेलया॥

(अध्यात्मसार - 08/03)

RNI No. : DELSAN/2011/3[illegible] ISSN 2321 - 4937 DL(E)-20/5534/2024-26

Posting Date.:
4-5, 19-20 of Every Month

सत्यनिष्ठा जयेल्लेखनी निर्भया

संस्कृत – संवादः

पाक्षिकं समाचारपत्रम्

संपादकीयकार्यालयः ए-२/३२, वजीराबाद मार्गः, भजनपुरा, देहली-११००५३, दूरभाषः ९३११०८६७५१
ई-मेलः sanskritsamvad@gmail.com वेबसाइटः www.sanskritsamvad.com मूल्यम्-रू. १०/-

॥ ओ३म् ॥

त्यक्त्वा धर्मं च लोभं च
मोहं चोद्यममास्थिता।
युध्यध्वमनहङ्कारा
यतो धर्मस्ततो जयः॥

(महाभारत, भीष्म पर्व - 21/11)

रङ्कं करोति राजानं राजानं
रङ्कमेव च।
धनिनं निर्धनं चैव निर्धनं
धनिनं विधिः ॥ चाणक्यनीति)

"शिशुपालवधमहाकाव्यम् : शिक्षामनोविज्ञानम्"

"शिक्षावशेन शतकैर्वशमानिनाय, शास्त्रे हि निश्चितधियां क्व न सिद्धमेति।।" 5/47-शिशु0 अर्थात् असम्भवं तद् शिक्षया सम्भाव्यते। विश्वेसर्वाधिकं प्राचीनं प्रसिद्धञ्च संस्कृतवाङ्मयम्। अत्र ही प्राचीनमर्वाचीनञ्च ज्ञानं विद्यते। शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य" एतेन वाक्यांशेन सिद्धमेतत् शिक्षा न आधुनिकी अपितु प्राचीनतमा वर्तते। भारतीय महाकाव्यानि शिक्षातथ्यैः तथा परिपूरिताः सन्ति। विशेषेण शिक्षाशास्त्रस्य अङ्कुरः भारतीय वेद -वेदाङ्गेषु तथा च महाकाव्येषु सन्निहितोऽस्ति। आवश्यकतानुसारं आधुनिक परिप्रेक्ष्ये शास्त्राणां गहनाध्ययनेन पुरातन शास्त्रपरिचिन्तिताः च भवितुं शक्नुवन्ति अस्यैव अनुशरणं कुर्वन् माघकाव्ये शिक्षाशास्त्रसम्बद्ध - शिक्षामनोवैज्ञानिक-तथ्यानामुन्मेषमेव अस्य पत्रस्य ध्येयः यश्च स्वसार्थकतां प्राप्नोति।

-डॉ0 सुरेन्द्र महतो
सहाकाचार्य-शिक्षासंकाय,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ,
नवदेहली-110016

भूमिका :-

काव्यशास्त्रविनोदेन कालोगच्छिति धीमताम् । इति नीति वचनानुसारं विद्वान मनुष्यः स्वकालं शास्त्रचर्चया व्ययीकरोति। एषा शास्त्र चर्चयाः भारतीय परिदृश्ये न नवीनतमा। परमैषा सभ्यतायाः विकासयात्रया सह प्रारभ्य सम्प्रति अपि विद्यते। साक्ष्यरूपेण भारतीय संस्कृतवाङ्गमयं विश्वस्य कस्यापि वाङ्मयस्योत्तरवर्ती नास्ति। अर्थात् संस्कृतवाङ्मये विश्वस्य प्राचीनतमकृतिः 'वेदस्य' महत्वपूर्ण स्थानमस्ति। चत्वारो: वेदा: सन्ति। ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदश्च, एते वेदाः तथा च एतेषां ब्राह्मणाः, आरण्यकाः, उपनिषद् एवञ्च शिक्षा ग्रन्थादि संस्कृतवाङ्मये प्रतिष्ठिताः। वेदाः सर्वविधानां स्रोतांसि विद्यन्ते। वेदोपवेदाभ्यां अनन्तरं भरतीय वाङ्मये पुराणं प्रमुख स्थानम्। येषां संख्या 18 इति मन्यते। एवमेव 18 उपपुराणाः अपि वर्तन्ते। लौकिकवैदिकसंस्कृते च पाणिनिवाल्मीकयोः यथासंख्यं अष्टध्यायी, वाल्मीकिरामायणस्य प्रतिनीधि ग्रन्थौ स्तः। आदि काव्यौ रामायणमहाभारतौ उत्तरवर्ती ग्रन्थाणां उपजीव्यौ स्तः। उपजीव्यपरंपरायां लघुत्रयी- रघुवंशम्, कुमारशंभवम्, मेघदूतम्, (कालिदास) तथा च वृहत्त्रयी- किरातार्जुनीयम्, (भारवि) शिशुपालवधम्, (माघ) नैषधीयचरितम्, (श्रीहर्ष) प्रख्यातौ स्तः। भारतीयपरंपरायाः वेदाः प्रमुखं स्थानं भजन्ते। तथा च वेदानां गूढार्थं ज्ञातुं वेदाङ्गानां रचना अभवत् । यत्र 'शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य' इत्युक्तम् घ्राण शब्दः नासिकायाः द्योतकः। यः जीवनस्य प्रतिष्ठायाः च परिचायकोऽस्ति। अतः शिक्षा विकासस्य कुँजी पूँजी इत्यपि कथ्यते । वेदाः विज्ञानानां विज्ञानाः कथ्यन्ते। भारतीयदार्शनिकपरंपरायाम् आस्तिकनास्तिकभागेन नव शाखाः सर्वमान्याः सन्ति।

आधुनिकविषयेषु मनोविज्ञानं महत्वपूर्णं स्थानमस्ति। यः दर्शन् शास्त्रात् पृथक् भूत्वा स्वास्तित्वं प्राप्तवान्। मनोविज्ञानस्य वहवः शाखाः येषु शिक्षामनोविज्ञानं विशिष्टम्। शिक्षामनोविज्ञाने विशेषेण अधिगमकर्तुः अधिगमवातावरणस्य तथा च परिस्थितीनां व्यावहारिकमध्ययनं क्रियते। यस्यान्तः अधिगमकर्तुः वृद्धिविकासः, बुद्धिः, अधिगम, व्यक्तित्वम्, समायोजनम् , रूचिः, अभिवृत्तिः, मूलप्रवृत्तिः, मानसिक-स्वास्थ्यं च अध्ययनं क्रियते। आचार्यः स्पष्टशब्देषु काव्यं प्रति कारणानां समन्वितरूपं अनेन प्रकारेण कारिकाबद्धमकरोत्। शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्र ....। अर्थात् काव्यं प्रति कारणेषु सर्वेषां समग्रं योगदानमस्ति। महाकवि-माघस्य कृतिः शिशुपालवधमहाकाव्येऽपि उक्त लक्षणानां समग्रतया दिग्दर्शनं भवति। महाकविरसौ स्वमहाकाव्ये विविधविषयान् 1683 पद्येषु तथा च 20 सर्गेषु प्रतिष्ठापितवान्। महाकाव्येऽस्मिन् राजनैतिक, पर्यावरणीय, सैन्यसमायोजनं, विज्ञानं, काव्यशास्त्रीय, वैयाकरण, मनोवैज्ञानिकं, शिक्षामनोविज्ञान च सम्बद्धाः अनेकानि तथ्यानि विद्यन्ते। आधुनिक सन्दर्भे भारतीय तथा च वैश्विक परिदृश्ये शिक्षामनोविज्ञानस्य आवश्यकता महत्वं च निधाय शिशुपालवध महाकाव्यस्य अध्ययनम् अभवत्।

अध्ययनस्य आवश्यकता महत्वञ्च :-

आधुनिकपरिदृश्ये यत्र नवनान्मेषी विषयान् आधुनिक युवानः वृत्तिः दृष्टया स्वीकुर्वन्ति तत्रैव अस्माकं महाकाव्येषु (शास्त्रेषु) अवगूढनूतनतम् गूढतथ्यानि अन्विष्य प्रत्यक्षीकरणस्य महति आवश्यकता। अपरपक्षे संस्कृतभाषायां रचितग्रन्थेषु निहिततथ्यानां आधुनिकरूपेषु प्रकाशनं आवश्यकम्। येन आधुनिक-युवानः (वर्तमान पीढ़ी) स्वसंस्कृति साहित्येन च परिचिताः स्युः। भारतीयाः मनीषयः तत्काले शिक्षामनोविज्ञानं जानन्ति स्म, उपयोगञ्च कुर्वन्ति स्म यदा मनोविज्ञानस्य शिक्षामनोविज्ञानस्य च उदयोऽपि न आसीत्। महाकविः माघस्य कृतौ शिशुपालवधमहाकाव्ये निहितानां शिक्षामनोवैज्ञानिकतथ्यानां अन्वेषणं च।

अध्ययनस्य उद्देश्यानि:-

1. ग्रन्थस्य परिचयज्ञानम्
2. ग्रन्थकारस्य परिचयज्ञानम्
3. शिक्षामनोवैज्ञानिक तथ्यानामन्वेषणम्।

अध्ययनविधिः-

अध्ययनं विश्लेषणात्मकं पद्धतौ विषयवस्तु विश्लेषणम् अनुसृतं वर्तते।

ग्रन्थ परिचयः-

'शिशुपालवध' महाकाव्यं बृहत्त्रयी मध्ये परिगण्यते यस्योपजीव्य महाभारत वर्तते। अस्मिन् महाकाव्य 20 सर्गाः 1645 (1683)श्लोकाः च सन्ति। कथेषा अस्माद् ग्रन्थाद् पूर्व क्रमशः श्रीमद्भागवतः 10 स्कन्धस्य 74 तमे अध्याये तथा च महाभारतस्य सभापर्वाणि 33, 34, तमे अध्यायेऽपि श्रीकृष्ण द्वारा चेदिनरेशस्य शिशुपालवधः वर्णितः अस्ति। विंसति सर्गाणां संख्यानुक्रम-विभाजनम् एवमस्ति।

सर्गों की संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	151	16	17	18	19	20
श्लोकों की संख्या	75	118	82	68	69	79	75	71	87	91	67	77	69	88	96	85	69	80	120	79

योगः 20/1645

प्रथम सर्गे नारद मुनिना श्रीकृष्णाय प्रदत्तः इन्द्र संदेशः, द्वितीये मन्त्रणां, तृतीये द्वारिकापुर्याः समुद्रस्य च वर्णनम्, चतुर्थे रैवतकपर्वतवर्णनम् , पंचमे सैन्य वर्णनम्, षष्ठे षटऋतवः, सप्तमे वनविहारः, अष्टमे जलविहारः, नवमे सूर्यास्तवेला, दशमे मद्यपानम्, एकादशे प्रभातः, द्वादशे प्रमाणम् त्रयोदशे श्रीकृष्णस्य समागमः, चतुर्दशे श्रीकृष्णार्घदानम्, पञ्चदशे- अपशकुनाविर्भावः, (शिशुपालवृत्ते) षोडसे दूतसंवादः, सप्तदशे- यदुवेशक्षोभणम्, अष्टादशे सकुलयुद्धवर्णनं, उनविंशे विंशे च श्रीकृष्णशिशुपालयुद्धम्

सृष्टिक्रमज्ञानम्-9/19, सांख्यदर्शनं 1/33 /14/19, न्याय - 2/91, आयुर्वेद 2/54,84,93,96 तथा च पुराण विषयक श्लोकाः-

सर्ग	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
श्लोकसंख्या	15	49	50	18	19	10,61	2,31	6,17	64,14	80	3,60

समाजशास्त्रे- 5/17 पर्यावरण सम्बद्धा विविधश्लोकाः चतुर्थादारभ्य दशमसर्गपर्यन्तं प्राप्यन्ते। शिक्षया शिक्षामनोविज्ञानेन वा सम्बद्धाः प्रायः 30 श्लोकाः प्राप्यन्ते। ये च अधोलिखित तालिकायां प्रदर्शिताः।

सर्ग	1	2	4	5	15	16	18	20
श्लोक	12,14, 18,27,73	6,11,21,22,26,29,30,51,54 77,78,79,80,81,82,94,109	37	47	87	39,40 44,47	11,22, 71	35

सीमांकनम्

माघकाव्यस्य प्रसिद्धासु अष्टव्याख्यासु मल्लीनाथकृत सर्वाङ्कषा टीका श्रेष्ठा अस्तीति इत्थं विदुषां मतम्। अस्याः हिन्दीव्याख्याटीका पण्डितहरगोविन्दकृता चौखम्भाविद्याभवन वाराणसीद्वारा पुनर्मुद्रितसंस्करणम् 2010 वर्षस्याध्ययनं कृतम्।

ग्रन्थकारपरिचयः

श्री विमलचलिसप्रभेदवदत्तकमाघः। जन्मस्थानम्:-भिन्नमालवम् अथवा श्री मालम् वर्तमाने गुर्जरप्रदेशः समयः एकादश शताब्दी । माघकाव्ये(शिशुपालवधे) विद्यमानशिक्षास्त्रीयं तथ्यम् विषयरूपे शिक्षाशास्त्रम् पाश्चात्यदृष्टया आधुनिकतममस्ति। परन्तु भारतीयवाङ्मये प्राचीनकालादपि विद्यमानमस्ति। यथा आदौ वर्णितमस्ति शिक्षाशास्त्रे नूतनं गूढतमज्ञानम् च सहजतापूर्वकं प्राप्तकरणस्य विधिः (प्रक्रिया) अस्ति। वर्तमाने शिक्षाशास्त्रस्य अन्तर्गतं मुख्यतया विभागद्वयम् वर्तते।

शैक्षिकपरिप्रेक्ष्यम्

यदन्तर्गतं शिक्षादर्शनम् , शिक्षामनोविज्ञानम् , शैक्षिकसमाजशास्त्रम्, शिक्षातकनीकी, शैक्षिकेतिहासम्, शैक्षिकप्रशासनम्, शैक्षिकशोधञ्च सम्मिलितं क्रियते।

शिक्षण-शास्त्रम् :-

यदन्तर्गतं विविध-विषयः सहजतापूर्वकं अधिगमकरणस्य नवीनतमविधिनामन्वेषणमेवं प्रयोगाः सम्मिलिताः सन्ति। साम्प्रतं शिक्षायाः महत्वपूर्णं क्षेत्रं वर्तते। मूल्यशिक्षा, पर्यावरणशिक्षा,स्त्रीशिक्षा, यौनशिक्षा, स्वास्थ्यशिक्षा, अध्यापकशिक्षा, चेत्यादयः। शिक्षायाः महत्वम् महाकविमाघेन स्वमहाकाव्यस्य 18 तमे सर्गस्य श्लोक संख्या 11, 22, तमे 71 तमे च इत्थं वर्णितमस्ति।

हयातैश्चातुर्विधयमस्त्रदिभेदाद्व्यासैः सौष्ठवाल्लाघवाच्च।
शिक्षाशक्तिं प्राहरन्दर्शयन्तो मुक्तामुक्तैरायुधैरायुधीयाः।।11।।

अर्थात् शिक्षायाः सामर्थ्यं प्रदर्शनं कुर्वन् योद्धारः (आयुधजीवनः) अस्त्रशस्त्रादीन् प्रहृतवन्तः। (अत्र शिक्षायाः अभिप्रायमस्ति यद लक्ष्यप्राप्तिसु सर्वप्रकारकं यद साधनं समर्थ्यञ्च कुशलतादिगुणं शिक्षाशक्तिमभ्यासपाटवं दर्शयन्तः अस्त्रदिभेदास्त्महास्त्रदिक भेदाच्चतुर्विधयं यातैः प्राप्तैःरह्य। पुनः-

भित्त्वा घोणामायसेनाधिवक्षः स्थूरीष्ठो गार्ध्रपक्षेणविः ।
शिक्षाहेतोर्गाढरज्ज्वेव ब)हेर्तुवक्त्रं नाशकद्दुर्मुखो ऽपिह।।22।।

"शिक्षाहेतोः शिक्षैव हेतु" शिक्षया निमितेन । नवशिक्षिताश्वशिक्षणार्थम् अर्थात् लौहनिर्मितग्रीधस्य पक्षयुक्तवाणविशेषद्वारा नासिकां कर्त्तयित्वा हृदये प्रास्टिाश्वशिक्षणय संस्थाञ्च रज्जुद्वारा बाधितःवृत् भवन् दुर्मुखं भूत्वापि मुखे भ्रामितुं न शक्तवान पुनः-

संदानान्तादश्विभिः शिक्षितास्तैरविरयाधःशातशस्त्रवलूनाः।
कूर्मौपम्यं व्यक्तमन्तर्नदीनामैभाः प्रापन्प्रग्रयोऽसूमयीनाम्।।71।।

(शिक्षितस्रैम्यस्तास्त्रिवधौरास्त्रिभरायुधौः) अर्थात् अस्त्रचालने पूर्णतः शिक्षितयोद्धद्वारा रथस्य अधः गत्वा तीक्ष्णशस्त्रद्वारा जानु । नीचैः कर्तनकृतगजस्य पादरक्तस्य नद्याम् कच्छपसदृश-दृष्टगताः भवन्ति उक्तत्रिषु एव पद्येषु क्रमशः शिक्षाशक्तिः,शिक्षाहेतुः, शिक्षितश्च शस्त्रस्य प्रयोगः अभवत् क्रमशः सामर्थ्य अथवा साधनम्, शिक्षणम् तथा शिक्षाप्राप्तेशिक्षित ज्ञानीरूपे व्यवहृतम्अस्ति। परन्तु आधुनिकशिक्षाशास्त्री अपि शिक्षा इत्थं त्रिषु रूपेषु एव व्याख्यां कुर्वन्ति।

शिक्षाशास्त्रे प्रथमतः

शिक्षायाः दार्शनिकविवेचनं प्राप्यते पुनः प्रसङ्गात् शिक्षामनोविज्ञानेन सम्बद्ध तथ्यम्। यथा शिक्षया व मनोविज्ञानेन सम्बन्धस्य शिक्षामनोविज्ञानान्तर्गतम् वृद्धिविकासयोः, अधिगमस्य, बुद्धेः, व्यक्तित्वस्य, रूचेः, मानसिकस्वास्थ्यस्य, परामर्शादीनां अधिगमकर्तुः परिप्रेक्ष्ये अध्ययनं क्रियते। माघकाव्ये शिक्षामनोवैज्ञानिकतथ्यानां उल्लिखितबिन्दून् निम्नलिखितरूपे द्रष्टुं शक्यते।

वृद्धि विकासः च (Growth and Development)

व्रजतः क्व तात व्रजसीति परिचयगतार्थमरूट ।
धौर्यमभिनदुदितं शिशुनाजननीनिर्भत्सनविवृद्धमयुन्ना।।।5/87।।

परिचयगतार्थमरूटम शिशुना परिचयाभ्यासपाटवाद्गतार्थम्। अभिप्रायोऽस्ति मातुः तर्जनात् वध 'नकोपयुक्तबालकद्वाराभोपितरः कुत्र गच्छ सन्ति? इत्थं सुस्फुटवाण्यां कथने सति अपि अभ्यासकारणात् ज्ञातवचनेन युद्धे गच्छतः शूरवीरस्य धैर्यं भग्नं कृतम्। अर्थात् बालकः स्पष्टाक्षरयुक्तवचनं कथितुं न शक्तवान्!, तथापि तस्य बालकस्य सुस्फुटवाणीं ज्ञाताभ्यासकारणात् पित्रा ज्ञातवान् । मनोविज्ञाने विकासावस्थायाम् आयाः आधारे गर्भाधारणादरभ्य आजीवनकाले दशभागेषु विभज्यते। यस्मिन् चतुर्थावस्थां (बाल्यावस्थायां) भागद्वये विभज्यते। प्रारंभिकबाल्यावस्था 2-6वर्ष यावत् । उत्तरबाल्यावस्था 6-10/12 वर्ष यावत्। अस्यामवस्थायां शारीरिकवृद्धया सहैव भाषाविकासस्य संवेगात्मक विकासस्य एवं

चतुर्थपृष्टस्य शेषभागः

संस्कृतशिक्षणशास्त्रम् अनुसंधानं च

विश्लेषणम्, सर्वेक्षणम्, व्यक्तिगताध्ययनम्, अनुसंधानम्, सांख्यिकं चेत्यादयः। येषां विवरणम् एवम् ज्ञातुं शक्यते -

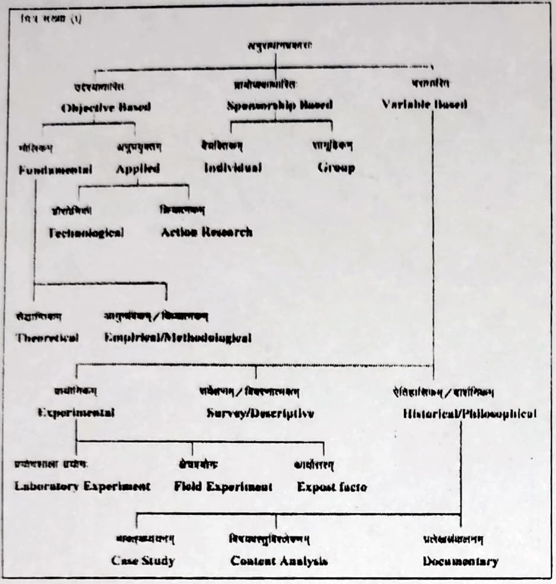

संस्कृतभाषाशिक्षणशास्त्रम् अनुसंधानम् च

संस्कृतं न केवला भाषा अपितु भारतीया परम्परा, यया भारतं वस्तुतो ज्ञातुं शक्यते। इदं ज्ञानस्य-विज्ञानस्य सभ्यतायाः संस्कृतेश्च मूल-स्रोतः। संस्कृतभाषा देवनागर्यां लिप्यां निबद्धा। भारतीयतायाः सम्यक् ज्ञानाय संस्कृतज्ञानं परमावश्यकम्।

पाठशालासु गुरुकुलेषु च संस्कृतभाषा पारम्परिकरीत्या पठ्यते-पाठ्यते च। किन्तु आधुनिकविद्यालयेषु व्याकरणानुवादविधिना भाषान्तरेण वा अध्याप्यते। आधुनिकयुगे न केवलं भारते अपितु समग्रे विश्वे संस्कृताध्ययनप्रति आकर्षणं वृद्धं तीव्रगत्या वर्धते च। अतः संस्कृतं शिक्षितुं शिक्षयितुं च आधुनिकतमवैज्ञानिकविधेः प्रयोगः छात्राणां प्रशिक्षकाणां च कृते लाभदायकः। संस्कृतशिक्षणशास्त्रस्य सम्बद्धस्य अनुसंधानस्य क्षेत्राणि एवं ज्ञातुं शक्यन्ते -

प्रयोगात्मकमनुसंधानम्

अत्र केचन चराः नियम्यन्ते, केचन परिचाल्यन्ते अन्येषु चरेषु जायमानाः प्रभावाः अधीयन्ते च। प्रयोगात्मकमनुसंधानम् - द्विधा - प्रयोगशालाप्रयोगः क्षेत्रप्रयोगश्च। रॉबिनसनमहोदयानुसारेण - "क्षेत्रप्रयोगः क्षेत्रे विधीयमानम् वैज्ञानिकमनुसंधानं वर्तते यत्र केचन स्वतन्त्राः चराः साक्षात् समायोज्यन्ते - वियुज्यन्ते च। इदमनेनोदाहरणेन वयं ज्ञातुं शक्नुमः -

इदं कल्प्यतां यद् वयं व्याकरणस्य प्रणाल्याः विभक्त्यन्तरूपाणां स्मरणस्य (रटनस्य) संरचनात्मकप्रणाल्या विभक्त्यन्तप्रयोगानां शिक्षणस्य च तुलनां कर्तुम् इच्छामः। एतदर्थं वयं छात्राणां द्वौ वर्गौ स्वीकुर्मः। यौ उपलब्धिः बुद्धिलब्धिः पूर्वयोग्यता प्रभृति दिशा समानौ स्याताम्। उभावपि वर्गौ समानयोग्यतायुक्ताभ्याम् अध्यापकाभ्यां पाठयिष्यतः। एकः वर्गः परम्परागतप्रणाल्याः अपरः वर्गः संरचनात्मकप्रणालया पाठयिष्यन्ते। ततः व्यतीते निश्चितावधौ उभयोः वर्गयोः उपलब्धयः परीक्ष्येरन्। ततः सांख्यिकीविधिना ज्ञातुं शक्यते यत् को वर्गः श्रेष्ठ इति। पारम्परिकप्रणाल्या शिक्षितं वर्गः स्वतन्त्रः यथास्थः समूहः स्यात्, यतः अस्मिन् विशेषविधिः न प्रयुक्तः। अन्यो वर्गः यत्र संरचनात्मकप्रणालीप्रयुक्ता स प्रयोगात्मकसमूहः कथ्यते। उभौ विधिसमानौ इति प्राक्कल्पना आसीत्। किन्तु यदा तुलनायां कृतायां उभयसमूहयोः महदन्तरं लभ्यते। तदा सार्थकमन्तरं स्यात्, संरचनात्मकप्रणालीतः प्रयोगस्य लब्धिः प्रत्याशातोऽधिका स्यात्, तदास्माकं प्राक्कल्पना निरस्ता स्यात्। एवं निष्कर्षः भवति यत् संरचनात्मकप्रणाली पारम्परिकप्रणालीतः श्रेष्ठा वर्तते। एवमन्येऽपि प्रयोगाः कर्तुं शक्यन्ते।

व्यक्त्यध्ययनविधिः

अयं विधिः समूहस्य कस्यचिद् तेषां जनानां संस्थानानांच परीक्षणाय उपयुज्यते, येषाम् अन्यैः सदस्यैः सह व्यवहारो भिन्नः भवति। अस्य प्रयोजनं वर्तते भिन्नव्यवहारस्य कारणं ज्ञात्वा समूहगतव्यवहारस्य अभिप्रेरणा अरुणकुमारसिंहेनयोगमतमेवमुल्लिखितम् - "व्यक्त्यध्ययने समूहगतैककस्य जीवनयात्रायाः विश्लेषणं च।"13

संस्कृतशिक्षणेऽत्र तादृशी समस्या कदाचनोपतिष्ठते यत्र केचन छात्राः अविकसिता भवन्ति अथवा पाठे ध्यानं न ददति अथवा ते छात्राः अन्ये छात्राः गृहकार्याणि न कुर्वन्ति, कक्षायां अन्यैः छात्रैः सह योग्यतायां समाना भवितुं न शक्नुवन्ति। [illegible] पदानां सम्यक् उच्चारणं न कुर्वन्ति अथवा प्रतिभाशालिनः सन्तोऽपि शिक्षकस्य ध्यानाकर्षणं [illegible]। ईदृशानां समेषां छात्राणां विशिष्टमध्ययनम् अपेक्षितम्। यथा - कश्चन छात्रः संस्कृताध्ययने न विकसति तत्र [illegible] [illegible] तस्य गृहपरिस्थितीनां शारीरिकमानसिकदुर्बलतानां न्यूनाधिकबुद्धीनां शिक्षकः सहपाठिनां वा प्रति भावनायाः [illegible] [illegible] विद्यालयदूषितवातावरणादीनाम् कारणस्यान्वेषणम्। शिक्षकः कारणं ज्ञात्वा निदानात्मकं [illegible] विधाय समाधानमपि उपायं कर्तुं शक्नोति। एतन्मिमित्रनुसंधानं साक्षात्कारः प्रमुखं साधनम्।

तुलनात्मकमध्ययनम्

समानयोः पदार्थयोः जनयोः समूहयोः वा भेदस्य ज्ञानं तुलनात्मकमध्ययनं कथ्यते। संस्कृतशिक्षणे [illegible] [illegible] तादृशाः विषयाः सन्ति यत्र परस्परतुलना अपेक्षिता। यथा संस्कृते त्रीणिलिङ्गानि सन्ति किन्तु आङ्ग्लभाषायां द्वे एव। ततः आङ्ग्लभाषाज्ञस्य संस्कृतं शिक्षितुं प्रवृत्तस्य जनस्य मनसि शंका भवति यत् संस्कृते त्रीणि लिङ्गानि कथं सन्ति ? एवमेव हिन्दीभाषाज्ञस्य संस्कृतशिक्षणप्रवृत्तस्य मनसि शंका स्वाभाविकी यदेकं नपुंसकलिङ्गं संस्कृते कुत आयातम्। किं शिक्षकः अस्यां समस्यायां ध्यानं दातुं शक्नोति ? किं स हिन्दीसंस्कृतयोः संस्कृतसंज्ञाशब्दैः तुलनां कर्तुं शक्नोति ? किं लिङ्गभेदं बोधनाय कश्चिद् नियमं निर्मातुं प्रभवति ? एवं एव समस्या शब्दोच्चारणे भवति। [illegible] मातृभाषा संस्कृतोच्चारणयोः वर्तनीशिक्षणविषये शिक्षणसाधनयोश्च तुलना विधातुं शक्यते। [illegible] [illegible] तत्र कालानां च तुलना नानादृष्टिभिः विधीयते। पाणिनि-राजशेखरप्रभृतयः विद्वांसः [illegible] [illegible] [illegible]। एवम् अन्यविषयाणामपि तुलनात्मकमध्ययनं विधातुं शक्यते।

विषयवस्तुविश्लेषणं संकलनं वा

प्रकाशितानाम् अप्रकाशितानां वा ग्रन्थानां संकलनं परीक्षणं विधाय समस्यानां समाधानं [illegible] अनुसंधानविषयस्य ज्ञानं स आधारेण अनुसंधानप्रकारं आगच्छति। [illegible] अरुणकुमारसिंहकर्लिंगरमतम् एवमुल्लिखितम् - "विषयवस्तुविश्लेषणं चराणां मापनार्थं चराणां क्रमबद्धवस्तुनिष्ठ परिणामात्मकरीत्या विश्लेषणस्य अध्ययनस्य च विधिः।"[1] अस्य स्पष्टीकरणाय उदाहरणम् अपेक्षितम्। यथा कश्चित शिक्षकः जिज्ञासते यत् स्वतन्त्रताकालात्-1947 अद्ययावत् भारतसर्वकारेण संस्कृतशिक्षार्थं के - के नवा अभिनियमाः निर्मिताः एतदर्थं स शिक्षकः संस्कृतेन तच्छिक्षणेन च सम्बद्धानां भारतसर्वकारायोगस्य क शिक्षायोगानाम् अधिनियमानां, एन. सी. इ. आर. टी. पाठ्यक्रमाणां, प्रलेखाणां च संकलनं विधास्यति। तदाधारेण प्रतिवेदनं निर्मास्यति च।

ऐतिहासिकमध्ययनम्-

अतीतानां जनानां, घटनानां स्थानानां च सम्बन्धस्य ज्ञापकम् इदमध्ययनं ज्ञापकं भवति। अनेन विधिना अनुसंधाता ज्ञातुं प्रयतते यत् जनाः स्थानानि घटना वा स्वसमयस्य समयान्तरस्य च साहित्यिकाः भाषिकाः, सामाजिकाः, सांस्कृतिकाः, धार्मिकाः बौद्धिकीश्च दशाः कथं प्रभावयन्ति। ऐतिहासिकाध्ययनस्य विषये रायजादावर्मा च वाजपेयी कालस्य च मतेन एवं कथयतः - "ऐतिहासिकं विश्लेषणं कस्यचिज्जनस्य कस्याश्चिद्विचारस्य आन्दोलनस्य कस्याश्चन संस्थायाश्च विषये निदेशनं भवति तथापि अत्र ऐतिहासिकप्रेक्षणस्य किमपि पृथक् वस्तु विचारणीयं न भवति।"15

कालविचारं पारस्परिकक्रिया वर्णनं च विना मनुष्यान्दोलनानि संस्थाश्च ऐतिहासिकानुसंधानस्य विषयाः न भवितुमर्हन्ति।

एतत् स्पष्टीकर्तुमुदाहरणमावश्यकम्

यथा- संस्कृतव्याकरणस्य शिक्षा एतावती दृढा केन कारणेन वर्तते ? संस्कृतव्याकरणस्य परम्परा सुदीर्घा या पाणिनेरपिपूर्वतः आगच्छति। अस्याः परम्परायाः ऐतिहासिकमध्ययनं कर्तुं शक्यते। संस्कृतग्रन्थानां लेखकानां चैतिहासिकमध्ययनं कर्तुं शक्यते। स्वतन्त्रताप्राप्तिमारभ्य अद्यावधि संस्कृतशिक्षणं कियत् प्रगतिरासीत् ऐतिहासिकाध्ययनस्य विषयः एवमन्येष्वपि विषयेषु ऐतिहासिकमध्ययनं विधातुं शक्यते।

सर्वेक्षणाध्ययनम्-

अत्रानुसंधाता चरसम्बन्धानां तत् वितरणप्रसारणांचाध्ययनं प्रयोगात्मकपरिस्थित्या सामाजिकपरिस्थित्या न विधत्ते। डॉ. सुनीलकुमारमिश्रः योगाङ्गं मतमुल्लिखन् कथयति - " समुदायविशेषस्य नियारास्य कार्यस्य च दशानां सम्बन्धे तथ्यानां संकलनं सर्वेक्षणं वर्तते।"[1] किन्तु अरूणकुमारसिंह करलिंगरस्य मतम् एवं प्रस्तुतवान् - सर्वेक्षणं लघुना महता वा जीवानां संख्यायाः अध्ययनं जीवसंख्यायाः प्रतिदर्शं चित्वा विधीयते, येन समाजशास्त्रीयचराणां मनोवैज्ञानिकचराणां च तुलनात्मकस्य आपतनस्य वितरणस्य अन्तःसम्बन्धानां चानुसंधानं कर्तुं शक्यते।"

वयम् उदाहरणेन सर्वेक्षणाध्ययनविषये एवं ज्ञातुं शक्नुमः। कल्प्यतां यत् कश्चित् संस्कृतशिक्षकः जिज्ञासते यत् विद्यालयस्य संस्कृतच्छात्रेषु संस्कृतम्प्रति कियतीरुचिरस्ति ? एतदर्थं तेन शिक्षकेण एका प्रश्नावली निर्मेया तदाधारेण छात्राणामभिमतं प्राप्य सांख्यिकीयविधिना विश्लेषणं विधाय निर्णयः कार्यश्च। इदं साक्षात्कारेण, पत्रद्वारा पत्रकद्वारा दूरभाषद्वारा च कर्तुं शक्यते।

क्रियात्मकमनुसंधानम्-

इदं सर्वाधिकमहत्वपूर्णम् यतः प्रतिकक्षं विद्यालयस्याधिकं सन्निकटं वर्तते। इदं शिक्षकेण शिक्षणे छात्राणां च सम्भाविताः बाधाः अपसारयितुं विधीयते। येन शिक्षणाधिगमप्रवाहो निर्बाधं प्रवहेत्। निरंजनकुमारसिंहेन एम. एम. कौर मतमुल्लिखद्भिः कथितम् -" क्रियात्मकमनुसंधानं सा प्रक्रिया वर्तते यथानुसंधाता स्वकार्यस्य निर्णयस्य निर्देशन-संशोधन-मूल्यांकनदृष्ट्या स्वसमस्यानाम् अध्ययनं वैज्ञानिकरीत्या कर्तुं प्रयतते।"

शिक्षकः शिक्षणस्य दृष्ट्या विशेषतः संस्कृतशिक्षणाय अधिकमहत्वपूर्णः। इदमनुसंधानं भाषान्तरशिक्षणे अधिकोपयोगि मतम् छात्रः एकां द्वे वा भाषे ज्ञात्वा संस्कृताध्ययने प्रवर्तते। अतः उच्चारणस्य मात्रायाः या प्रयोगे सम्भावितानां समस्यानां दूरीकरणं इदं पर्याप्तसहायकं भवति। अस्यानुसंधानस्योदाहरणानि इमानि सन्ति।

1- संस्कृतभाषाशिक्षणकौशलानां प्रोन्नयनाय उचितक्रियाकलापानाम् आयोजनं परीक्षणं च।
2- वर्तनीशिक्षणे श्रुतलेखविधेः अनुलेखविधेश्च तुलनात्मकमध्ययनम्।
3- संस्कृतशिक्षणार्थिनां प्रभावस्याध्ययनम्।

एवमत्र भवद्भिरवलोकितं यत् संस्कृतशिक्षणे शिक्षणशास्त्रे च अनुसंधानस्य विशिष्टं स्थानम् येन अनुसंधानस्य विविधक्षेत्रेषु जायमानानां नवान्वेषणानां संस्कृतशिक्षणशास्त्रे प्रयोगं विधाय संस्कृतशिक्षणम् समयसापेक्षं विधातुं शक्यते। एवं भवन्तः वैज्ञानिकानां सामाजिकानां मनोवैज्ञानिकानां चानुसंधानानां च कानिचित् विशिष्टानि उदाहरणानि दृष्टवन्तः। यानि आश्रित्य प्रतिदिनं जायमानं परिवर्तनं स्व च्छात्रान् बाधायन्तम् अनुसंधानाय प्रयत्नं च शक्नोति

सन्दर्भ

1. (अनु+सम+धा+ल्युट्) पूर्ण अन्वेषण, गहन निरीक्षण या परीक्षण, खोज, [illegible] [illegible] संस्कृत हिन्दी कोश - वामन शिवराम आप्टे - पृ. सं. 43, 2002, नयी दिल्ली, [illegible]
2. शुद्+घञ् (शुध शोधे) शुद्ध करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। - संस्कृत शिक्षण - डॉ. रघुनाथ सफाया - पृ. सं. [illegible] 1997, हरियाणा संस्कृत अकादमी, चण्डीगढ़।
3. (गवेष+ल्युट्, पृषो+टाप् वा) किसी वस्तु की तलाश या खोज। संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे पृ. सं. [illegible]
4. Investigation - Page. 27 - प्रशासनिक शब्दावली हिन्दी-अंग्रेजी वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग भारत सरकार-2014।
5- Research - The systematic investigations into & study of materials and sources in order to establish facts & reach new conclusions. www.oxforddictionaries.com.
6- Invention - The action of inventing something, typically a process or device in www.oxforddictionaries.com.
7-Investigation - The act of process of examining a crime, problem, statement etc carefully especially to discover the truly. Dictionary- www.cambridge.org
8- Discovery - The process of finding information, a process found. Dictionary www.cambridge.org
9 [illegible]
10 [illegible]
11 [illegible]
12 [illegible]
13 अरुण कुमार सिंह - [illegible] 2011।
14 अरुण कुमार सिंह - [illegible] दिल्ली-7 2011।
15 [illegible] पृ. सं. 122 राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर [illegible]
16 डॉ. सुनील कुमार मिश्र [illegible] पृ. सं. 80 [illegible]
17 अरुण कुमार सिंह [illegible] पृ. सं. 29।
18 निरंजन कुमार सिंह माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण पृ. सं. 300, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर-[illegible]

॥ ओ३म् ॥

'न तच्छस्त्रैर्न
नागेन्द्रैर्न हयैर्न पदातिभिः।
कार्यं संसिद्धिमभ्येति
यथा बुद्ध्या प्रसाधितम्।'

(पंचतंत्र)

कष्टेन हि गुणग्रामं
प्रगुणी कुरुते मुनिः।
ममता राक्षसी सर्वं भक्षयत्येकहेलया॥

(अध्यात्मसार - 08/03)

RNI No. : DELSAN/2011/38660 ISSN 2321 - 4937 DL(E)-20/5534/2024-26

Posting Date.:
4-5, 19-20 of Every Month

सत्यनिष्ठा जयेल्लेखनी निर्भया

संस्कृत – संवादः

पाक्षिकं समाचारपत्रम्

संपादकीयकार्यालयः ए-२/३२, वजीराबाद मार्गः, भजनपुरा, देहली-११००५३, दूरभाषः ९३११०८६७५१
ई-मेलः sanskritsamvad@gmail.com वेबसाइटः www.sanskritsamvad.com मूल्यम्-रू. १०/-

॥ ओ३म् ॥

त्यक्त्वा धर्मं च लोभं च
मोहं चोद्यममास्थिताः।
युध्यध्वमनहङ्कारा
यतो धर्मस्ततो जयः॥

(महाभारत, भीष्म पर्व - 21/11)

रङ्कं करोति राजानं राजानं
रङ्कमेव च।
धनिनं निर्धनं चैव निर्धनं
धनिनं विधिः॥ चाणक्यनीति)

भारतीयविद्यालयीय संरचना राष्ट्रीय-शिक्षा-नीतिः २०२०

-डा. सुरेन्द्र महतो
सहायकाचार्यः, शिक्षापीठम्,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली।

विद्यालयः इत्यस्मिन् पदे द्वयोः पदयोः समासो भवति तत्र प्रथमस्ति विद्या द्वितीयंच आलयः अत्र सर्वप्रथमं विद्या इत्यस्मिन् पदे विचारयामः। विद् ज्ञाने इत्यस्मात् धातोः "कप्रत्यये" कृते सति अदन्तत्वात् "टाप् प्रत्यये" कृते सति "विद्या" इति निष्पद्यते । आङ्- उपसर्गपूर्वकात् ली - धातोः अधिकरणार्थे अच् - प्रत्ययं कृते सति सिध्यति "आलयः" शब्दः इति। विद्यायाः आलयः इत्थं प्रकारेण षष्ठीतत्पुरुषसमासं कृत्वा भवति "विद्यालयः" अर्थात् यत्र विद्या आधेयता सम्बन्धेन विराजते तत् सुस्थलं भवति विद्यालयः। विषयेऽस्मिन् विद्यालयस्य विशेषणमस्ति भारतीयः। तत्र भारते भव इत्यस्मिन्नर्थे छ-प्रत्यये कृते सति सिध्यति "भारतीयः" सामान्यरूपेण वक्तुं शक्यते भारतस्य अथवा भारते विद्यमानः। तस्मात् "भारतीयः विद्यालयः" इत्यस्य आशयो भवति भारते विद्यमानः विद्यालयः अथवा भारतीयविशेषणत्वेन यः विशेष्टारूपः विद्यालयः प्राप्यते सः भारते एव वर्तते न तु अन्यत्र। अतः अत्र विद्यालयविषये चर्चां कृत्वा विशेषरूपेण भारतीय-विद्यालय-विषये विचारां विधीयते ।

एषःSchool इति शब्दः"ग्रीकभाषायाः'"*"SKhole" इति शब्दात् निष्पादितो मन्यते यस्य अर्थो भवति "अवकाशः" अर्थात् सामान्यरूपेण वक्तुं शक्यते यत् "आत्मविकासाय यत्र अवकाशः प्राप्यते तत School इति कथ्यते । यत्र केचन जनाः कस्मिन्चिदपि चयनितविषये कैश्चन जनैः सह सुव्यवस्थितरूपेण चर्चां सम्पादयन्ति तत्स्थान-विशेषः भवति विद्यालयः। यत्र विद्यार्थिनां विद्यार्जनविषये जीवनस्य लक्ष्यविषये शिक्षायाः महत्त्वादिविषयेषु अध्यापकैः सतत् मार्गदर्शनं क्रियान्वयं च क्रियते तद् भवति विद्यालयः।

विद्यालयः एकं तादृशं स्थलं यत्र बालकस्य शारीरिकः, मानसिकः, आध्यात्मिकः विकासः व्यक्तित्वस्य च विकासो भवति इति विवेकानन्देन उक्तम् । विद्यालयः ताः संस्थाः सन्ति याः सभ्यमनुष्यैः एतदुद्देश्येन संस्थाप्यन्ते यत् समाजे सुव्यवस्थितयोग्यसदस्यतायै बालकानां सिद्धतायां सहायता प्राप्यते प्राप्नुयात् वा इति रॉस महोदयेन निगदितम्।

विद्यालयस्य आधारभूततत्त्वानि - विद्यालयस्य आधारभूतं भवति भौतिकसंसाधनम् यतोऽहि भौतिकसंसाधने विद्यालयस्य भवनं, क्रीडाक्षेत्रं, पुस्तकालयः, प्राङ्गणं, जलपानगृहं सभागारः आदि साधनानि भवन्ति। विद्यालयस्य प्राणभूतं वर्तते मानवीयसंसाधनम्। अत्र छात्राः, अध्यापकाः, कर्मचारिणः एतं मानवीयसंसाधनरूपेण विद्यालयस्य प्राणभूतं वर्तन्ते चेतनास्वरूपरूपेण च वर्तन्ते। विद्यालयस्य मूलबीजरूपं भवति प्रणालीसंसाधनम्। अत्र विद्यालयस्य अभिलेखाः, पंजिकाः, पत्रिकाः, अन्यानि महत्त्वपूर्णानि पत्राणि भवन्ति। एतानि एव विद्यालयस्य अस्तित्वस्य संरक्षकानि संवर्धकानि च वर्तन्ते।

विद्यालयस्य प्रकाराः-

(क) कालानुसारेण- वैदिकगुरुकुलम्।

स्लामिकविद्यालयः।

आधुनिकविद्यालयः।

1. वैदिकगुरुकलम्- एषा पद्धति भारतस्य अतीव प्राचीनतमा वर्तते। पुरा अस्माकं देशे "उपनयनसंस्कारस्य" अतीव महत्त्वम् आसीत् उपनयनम् इत्यस्य अर्थः गुरोः समीपं नयनम् अर्थात् यज्ञोपवीतसंस्कारय एवंच विद्यारम्भसंस्काराय च गुरुकुलगमनम्। एषा शिक्षणपद्धत्या एव भारतः विश्वगुरुः कथ्यते स्म। वर्तमानसमयेऽपि गुरुकुलानि सुचारुरूपेण प्रचाल्यमाणानि वर्तन्ते। संस्कृतः संस्कृतस्य च प्रचारं प्रसारं च कुर्वाणः सन्ति।

2. इस्लामिकविद्यालयः - भारते मुहम्मद-गौरीशासकस्य शासने इस्लामिकविद्यालयानां बीजरोपणम् अभवत् तस्मादेव भारते इस्लामिकविद्यालयाः अस्तित्वे आगताः आसन् वर्तमानेऽपि बहवः इस्लामिकविद्यालयाः प्रचाल्यमाणाः वर्तन्ते ।

3. आधुनिकविद्यालयः -आधुनिकविद्यालयाः पूर्णरूपेण ब्रिटिश-कालात् एव उद्भूताः सन्ति। ब्रिटिशशासनकाले बहवः विद्यालयाः निर्मिताः तेषां निर्धारितोद्देश्यानि च निर्मितानि किन्तु तत्र मुख्यरूपेण तादृशी शिक्षा एवं दीयते स्म येन जनानां केवलं लेखनकौशलम् एव वर्धितम् यतोऽहि प्रशासनिकपदे तु ब्रिटिशजनाः स्वमेव विराजन्ति स्म तत्र लिपिकरूपेण च भारतीयाः भवन्ति स्म। भारते "लॉर्ड-मैकाले द्वारा उपस्थापितायाः "शिक्षा-नीतेः" एव प्रचारः प्रसारः विद्यालये च स्वीकृता आसीत् वर्तमानसमयेऽपि मुख्यरूपेण स्वीकार्या अनुसरणयोग्या रूपेण ज्ञायते।

(ख) शासनव्यवस्थायाः आधारेण

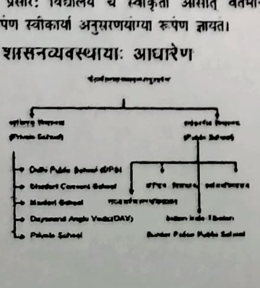

(ग) बोर्डव्यवस्थायाः आधारेण -

1.CBSE - केन्द्रिय-माध्यमिक-शिक्षा-बोर्ड।

2. ICSE - भारतीय माध्यमिक-शिक्षा-प्रमाण-पत्रम्।

3. State Board- राज्य-बोर्ड ।

4. Sanskrit Board - संस्कृत-बोर्ड।

5. Islamic Board -इस्लामिक बोर्ड।

(घ) स्तरस्य आधारेण

(पूर्व-प्राथमिक-विद्यालयः)

(प्राथमिक-विद्यालयः) (माध्यमिक-विद्यालयः)

(उच्च-माध्यमिक-विद्यालयः)

विद्यालयस्य कार्यम् - 1. औपचारिककार्यम् 2. अनौपचारिककार्यम्

1. औपचारिककार्यम् -

(क) मानसिकयोग्यतानां विकासः - अत्र बालकस्य बुद्धि-विवेक-विचार-शक्तियोग्यतादीनां विकासस्य सम्पादनं भवति। मुख्यरूपेण मानसिकयोग्यताविषये चिन्तनं क्रियते।

(ख) सन्तुलितमस्तिष्कस्य विकासः - अत्र बालकस्य सन्तुलितमस्तिष्कस्य विकासः कथं करणीयः इत्यस्मिन् विषये क्रियान्वयः अपि भवति ।

(ग) संस्कृतिसंरक्षणम् हस्तान्तरणम् च- अत्र बालकान् इतिहासपुराणस्य, धर्मशास्त्रस्य, दर्शनस्य साहित्यादिविषयाणाम् अध्यापयन्ति अध्यापनमाध्यमेन तेषां संस्कृतिना सह परिचयं कारयन्ति सहैव तेषां कृते दायित्वं प्रदीयते स्वकीयसंस्कृतेः प्रचारः प्रसारः हस्तान्तरणं च कर्तव्यम् ।

2. अनौपचारिककार्यम् - (क) शारीरिककार्यम् -शास्त्रे लिखितं वर्तते "शरीरमाद्यं खलु साधनम्" अतः विद्यालये बालकस्य शारीरिक विकासोऽपि विधीयते।

(ख) सामाजिकभावनायाः विकासः- अत्र बालके सामाजिकसहयोगस्य, सहनशीलतायाः, अनुशासनस्य, सहानुभूतेः, सामाजिकचेतनादिगुणानां विकासः क्रियते ।

राष्ट्रीयशिक्षानीति २०२० इत्यनुसारेण विद्यालयी शिक्षासंरचनायाः स्पष्टीकरणं प्रस्तूयते -

एतावत् पर्यन्तं स्वतन्त्रभारते तिस्रः शिक्षानीतयः आचरिताः उद्घोषिताः च विद्यन्ते । ताश्च यथा -

1. राष्ट्रीयशिक्षानीतिः 1968 । 2. राष्ट्रीयशिक्षानीतिः 1986 ।

3. राष्ट्रीयशिक्षानीतिः 2020 ।

1. राष्ट्रीयशिक्षानीतिः 1968 इत्यनुसारेण विद्यालयी शिक्षासंरचना -

एषा नीतिः जुलाई मासस्य 24 दिनाङ्के 1968 तमे वर्षे भारतसर्वकारेण उद्घोषिता। अत्र "कोठारी-आयोगस्य" अतीव महत्त्वपूर्णं योगदानं आसीत् । अत्र 10+2+3एषा शिक्षासंरचना स्वीकृता आसीत्।

10 - अर्थात् प्रथमकक्षातः, दशमकक्षापर्यन्तं प्रारम्भिकशिक्षा माध्यमिकशिक्षा च ।

+2- अर्थात् एकादशकक्षातः द्वादशकक्षापर्यन्तं उच्चमाध्यमिकशिक्षा।

+3- अर्थात् त्रिवर्षीयस्नातकीयकक्षा उच्चशिक्षा।

इत्यत्र विद्यालयीस्तरे छात्रेभ्यः छात्राभ्यश्च समानशिक्षा तथा गणितस्य विज्ञानस्य च अनिवार्य-शिक्षा दातव्या इति निश्चितं कृतम् ।

2. राष्ट्रीयशिक्षानीतिः 1986 इत्यनुसारेण विद्यालयी शिक्षासंरचना - नीतिरियं मई-मासे 1986 तमे वर्षे उद्घोषिता आसीत् । अत्र 10 (5+3+2) + 2 + 3एषा शिक्षासंरचना स्वीकृता आसीत् ।

10 (5+3+2)

5 - अर्थात् प्रथमकक्षातः पंचमकक्षा - पर्यन्तं "प्राथमिकशिक्षा"।

3- अर्थात् षष्टकक्षातः अष्टमकक्षा- पर्यन्तं "उच्चप्राथमिकशिक्षा"।

2 - अर्थात् नवमकक्षातः दशमकक्षा-पर्यन्तं "माध्यमिकशिक्षा"।

+2- अर्थात् एकादशकक्षातः द्वादशकक्षा -पर्यन्तं "उच्चमाध्यमिक शिक्षा"।

+3- अर्थात् स्नातककक्षा त्रिवर्षीया "उच्चशिक्षा" ।

अत्र पाठ्यक्रमः स्तरानुसारेण विनिर्मितः अत्र मुख्यरूपेण छात्रेभ्यः छात्राभ्यश्च तकनीकिशिक्षा व्यवसायिकी-शिक्षा च प्रदातव्या इति सुनिश्चितं कृतमासीत् ।

राष्ट्रीयशिक्षा-नीतेः 1986 इत्यस्याः संशोधनं 1992 तमे वर्षे अभवत् । तत्र बहूनि संशोधनानि जातानि । अत्र कानिचन प्रमुखाणि प्रस्तूयन्ते।

1. राष्ट्रीयशिक्षानीतौ 1986 इत्यस्या नवम- दशमकक्षायाः गणना माध्यमिकस्तरीयशिक्षारूपेण आसीत् । किन्तु संशोधितायां राष्ट्रीयशिक्षानीतौ 1992 इत्यस्यां +2इति कृत्वा नवम-दशम-एकादश-द्वादशकक्षायाः गणना माध्यमिकस्तरीयशिक्षारूपेण कृतासीत् ।

2. यत्र त्रिशत जनाः भवन्ति स्म तत्र एकःप्राथमिकविद्यालयः भवति स्म किन्तु संशोधनात् द्विशत जनाः यत्र प्राप्यन्ते तत्र प्राथमिकविद्यालय भवेत् इति ।

3. दूरस्थशिक्षायाः विस्तारः करणीयः तदर्थं प्रत्येकं राज्ये एतादृशाः विद्यालयाः भवन्तुः इति योजना प्रसारिता।

4. राष्ट्रीयशिक्षानीतिः 2020 इत्यनुसारेण विद्यालयी शिक्षासंरचना - अस्याः नीतेः घोषणा भारतसर्वकारेण जुलाई मासस्य 29 दिनाङ्के 2020 तमे वर्षे कृता । एषा नीतिः "अंतरिक्षवैज्ञानिक - कं. कस्तूरीरंगन - महोदयस्य" अध्यक्षतासम्बन्धिनीसमित्याः प्रतिवेदने आधारिता वर्तते।

अस्याः प्रमुखोद्देश्यानि - 1. 2030 तमवर्षपर्यन्तं सकलनामांकनानुपातः (Gross Enrolment Ratio & GER)100: प्रतिशतं प्राप्नुयात् इति लक्ष्यं निधारितम्।

2. शिक्षा-क्षेत्रे "सकलघरेलू उत्पाद"(Gross Domestic Product&GDP) इत्यस्य 6% प्रतिशतांशस्य सार्वजनिकव्ययस्य लक्ष्यं निधारितम् ।

3.मानव-संसाधन-विकास-मंत्रालयः इत्यस्य नाम परिवर्तनं कृत्वा "शिक्षा-मंत्रालयः" कृतः ।

4.पंचमकक्षापर्यन्तस्य शिक्षायां मातृभाषा-स्थानीय-क्षेत्रीय भाषां शिक्षामाध्यमस्य रूपे स्वीकरणे बलं प्रदत्तम् ।

राष्ट्रीयशिक्षानीतिः 2020 इत्यनुसारेण विद्यालयी शिक्षासंरचना - अत्र 5+3+3+ 4 एषा शिक्षासंरचना आचरिता वर्तते ।

5 ="फाउंडेशन स्टेज" इति अत्र प्रथमत्रिवर्षाणि छात्राः प्री-स्कूलिंग-शिक्षां स्वीकरिष्यन्ति तदनन्तरञ्च प्रथमकक्षायां द्वितीयकक्षायां अधिगमिष्यन्ति। इदं चरणं गतिविध्याधारितम् ।

+3 ="प्रीप्रेटरी स्टेज" इति अस्मिन् चरणे तृतीयकक्षातः पंचमकक्षापर्यन्तस्य अध्यापनं भविष्यति । अत्र प्रयोगात्मक - विधि द्वारा विज्ञान-गणित-कला- संगीतादिविषयाणाम् अध्यापनं भविष्यति ।

+3 ="मिडिलस्टेज" इति अत्र षष्ठमकक्षातः अष्टमकक्षापर्यन्तं छात्राः पाठयिष्यन्ते । एवंचात्र विषयाधारितः पाठ्यक्रमः पाठयिष्यते ।

+3 ="सैकेंडरीस्टेज" इति अस्मिन् चरणे नवमकक्षातः द्वादशकक्षापर्यन्तं छात्राः अध्ययनं करिष्यन्ति । तथा च विषयचयनस्य स्वतन्त्रता भविष्यति ।

विद्यालयी शिक्षायां परिवर्तनम् -

1.रिपोर्ट-कार्ड मध्ये लाइफ- स्किल्स "जीवन - कौशलानि" इति सम्मिलितम् । 2.छात्राणां कृते नवीनकौशलपाठ्यक्रमः (New Skill Coding Course) आरम्भः । 3. पाठ्येतरगतिविधयः (Extra Curricular activities) मुख्यपाठ्यक्रमे समाविष्टाः सन्ति ।

4. त्रिवर्षतः षड्वर्षपर्यन्तानां (3-6) छात्राणां कृते बाल्यवस्थारक्षणं शिक्षणं च करणीयम्। 5.NCERT द्वारा "फाउंडेशनल-लिट्रेसी" मूलसाक्षरतायां एवं "न्यूमेरसी"'"संख्यात्मकसन्दर्भे" राष्ट्रीययोजना प्रचलिता।

"विद्यालयी शिक्षा-संरचना"

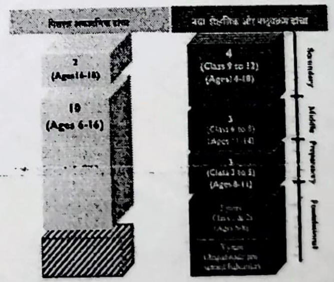

निष्कर्षः - निष्कर्षरूपेण वस्तुं शक्यते यत् विद्यालयः एकम् एतादृशम् उपवनं वर्तते यत्र शिक्षकः मालीरूपेण पुष्परूपीनां छात्राणां संरक्षणं संवर्धनं च करोति ।

भारतदेशे समये समये शिक्षायाः क्षेत्रे समुचितानि चिन्तनानि जातानि जायमानानि च वर्तन्ते । अस्मिन् सत्रीयकार्ये स्वतन्त्रभारते आचारितानां शिक्षानीतीनां विषये संक्षिप्त-परिचयमुपस्थापितं तत्रापि मुख्यरूपेण शिक्षानीति-अनुसारेण विद्यालयी शिक्षा संरचनायाः स्वरूपवर्णनमपि कृतम् । तेन ज्ञायते यत् भारतसर्वकारेण शिक्षायाः संवर्धनाय संरक्षणाय च स्वञ्च विद्यालयी शिक्षा-संरचनायाः कृते समयानुसारं परिवर्तनं जातम् । यथा 10+2+3ए 10 (5+3+2) + 2 + 3 एवञ्च 5 + 3 + 3 + 4 एतादृशाः शिक्षासंरचनाः परशिताः याः सदैव मानवानां कल्याणाय वर्तन्ते । अतः अस्माभिः भारतसर्वकारस्य शिक्षाभियानस्य सहयोग कर्तव्यम्।

सन्दर्भः
1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। 2. प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा. अभिषेक प्रकाशन नई दिल्ली। 3. भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास. शिक्षा पब्लिकेशन नई दिल्ली। 4. संस्कृत हिन्दी शब्दकोश. वाम शिवराम आप्टे. नई दिल्ली। 5. सिद्धान्त कौमुदी. चौखम्बा विद्या भवन. वाराणसी। 6. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा. आर. लाल. बुक डिपो. मेरठ। 7. उदीयमान भारतीय शिक्षा. रस्तोगी पब्लिकेशन. मेरठ।

॥ ओ३म् ॥

'न तच्छस्त्रैर्न
नागेन्द्रैर्न हयैर्न पदातिभिः।
कार्यं संसिद्धिमभ्येति
यथा बुद्ध्या प्रसाधितम्।'

(पंचतंत्र)

कष्टेन हि गुणग्रामं
प्रगुणी कुरुते मुनिः।
ममता राक्षसी सर्वं भक्षयत्येकहेलया॥

(अध्यात्मसार - 08/03)

RNI No. : DELSAN/2011/38660 ISSN 2321 - 4937 DL(E)-20/5534/2024-26

Posting Date.:
4-5, 19-20 of Every Month

सत्यनिष्ठा जयेल्लेखनी निर्भया

संस्कृत – संवादः

पाक्षिक समाचारपत्रम्

संपादकीयकार्यालयः ए-२/३२, वजीराबाद मार्गः, भजनपुरा, देहली-११००५३, दूरभाषः ९३११०८६७५१
ई-मेलः sanskritsamvad@gmail.com वेबसाइटः www.sanskritsamvad.com

मूल्यम्-रू. १०/-

॥ ओ३म् ॥

त्यक्त्वा धर्मं च लोभं च
मोहं चोद्यममास्थिता।
युध्यध्वमनहङ्कारा
यतो धर्मस्ततो जयः॥

(महाभारत, भीष्म पर्व - 21/11)

रङ्कं करोति राजानं राजानं
रङ्कमेव च।
धनिनं निर्धनं चौव निर्धनं
धनिनं विधिः ॥ चाणक्यनीति)

ISSN 2454-1230

चतुर्दशोऽङ्कः, XIVth Issue

जुलाई-दिसम्बर, 2021

July-December 2021

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्कः 14)

अनुक्रमणिका

	प्रधान सम्पादकीय	viii
	प्रबन्ध सम्पादकीय	ix
1.	राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020 प्रो. चान्दकिरण सलूजा	1
2.	'राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020' सन्दर्भे संस्कृतविश्वविद्यालयेषु बहुविषयकतायाः क्रियान्वयनोपायाः प्रो. सन्तोषमित्तलः	6
3.	National Education Policy 2020: Inclusive Classroom Environment and Constructivist Learning Approach Prof. Rachna Verma Mohan	12
4.	राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के सन्दर्भ में अध्यापक शिक्षा डा. प्रकाश चन्द्र पन्त 'दीप'	21
5.	नई शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन डा. सुरेंद्र महतो	32
6.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक की संकल्पना डा. दयानिधि शर्मा	36
7.	शैक्षिक तकनीकी के प्रोन्नयन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा निति-2020, के दिशानिर्देश डा. सुनील कुमार शर्मा	43
8.	NEP 2020 : Core Spirit and its Objectives Dr. Jitender Kumar	55
9.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की दार्शनिक पृष्ठभूमि डा. नितिन कुमार जैन	67
10.	नवराष्ट्रियशिक्षानीतेः परिप्रेक्ष्ये संस्कृतशिक्षा डा. मनीषजुगरानः	74
11.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यचर्यागत परिवर्तन डा. अजय कुमार	81

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका)
चतुर्दशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, 2021
ISSN : 2454-1230

5.

नई शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन

डॉ. सुरेन्द्र महतो

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली

"शिक्षा व्यवस्था में किए जा रहे बुनियादी बदलावों के केन्द्र में अवश्य ही शिक्षक होने चाहिए।"[1] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का यह अंश शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका स्वतः स्पष्ट करती है भारतीय शिक्षा व्यवस्था (विश्व भर में अपनी अमिट छाप छोड़ी है।) जो सम्पूर्ण विश्व के लिए अनुकरणीय रहा है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों का स्थान सर्व प्रमुख रहा है इसका साक्ष्य भारतीय साहित्य में बहुतायत प्राप्त होते हैं। विशेषकर उपनिषदों में प्राप्त गुरु-शिष्य संवाद आदि अनेकों शैक्षिक सुदृढ़ता का प्रमाण है। ना सिर्फ प्राचीन काल और मध्यकाल में अपितु आधुनिक काल में भी भारत में शिक्षकों की एक परम्परा सी स्थापित है। जिनमें से एक नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है वह है भारत रत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन। जिनकी विद्वता की ख्याति ना केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फैली हुई है। भारतीय शिक्षा एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन से सम्बद्ध कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों को इस पत्र में उद्धृत किया गया है।

सम्पूर्ण विश्व, विकास के मूल में शिक्षा के स्थान को एक मत से स्वीकार किया है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था उसके विकास के लिये जिम्मेवार मानी जाती है। भारत प्राचीन काल से ही समृद्ध रहा है इसका मुख्य कारण है यहां की समृद्ध शिक्षा व्यवस्था। जहां प्राचीन काल में वैदिक ऋषियों की बात करें या उत्तर वैदिकालीन। वैज्ञानिक गौतम, कणाद, आर्यभट्ट, नागार्जुन या फिर चिकित्सा शास्त्र के विद्वान चरक, सुश्रुत आदि। भारतीय साहित्य विश्व का सबसे समृद्ध एवं प्राचीन साहित्य है जो शिक्षक एवं छात्र (गुरु-शिष्य) परम्परा के माध्यम से ही आज भी हमारे समक्ष ज्यों के त्यों उपलब्ध है।

आधुनिक भारतीय शिक्षा में प्रसिद्ध शिक्षकों की सूची में कुछ महत्त्वपूर्ण नाम इस प्रकार है - समर्थगुरु रामदास, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महर्षि अरविंदो घोष, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, डॉ. एस. राधाकृष्णन, डॉ. जाकिर हुसैन आदि। इन सभी ने अपनी शिक्षा के द्वारा राष्ट्र को समृद्ध किया, साथ ही एक नवीन तथा अनुकरणीय कीर्तिमान स्थापित किया। स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा आयोग के अध्यक्ष डॉ. एस. राधाकृष्णन की विद्वता तथा दूरदर्शिता की छाप भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आज भी अमिट है। शिक्षकों के खोये हुए सम्मान को वापस दिलाने हेतु शिक्षक दिवस की संकल्पना एक आदर्श शिक्षक की महानता को प्रकट करता है। आज जब आजादी के 73-74 वर्ष बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लायी गयी है तो इसमें डॉ. एस. राधाकृष्णन के सपने को महत्त्वपूर्ण

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

48 वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाई-सितम्बर) 2023 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. शाब्दिकाभिमतो नामार्थविचारः 1-7

– डॉ. गोविन्दपौडेलः

2. मम्मटीयगूणीभूतव्यङ्ग्स्योपजीव्यत्वविचारः 8-20

– डॉ. राजकुमारमिश्रः

3. निरुक्तमतेन जातिपदार्थविचारः 21-27

– डॉ.बद्रीनारायणगौतमः

4. इण्डोनेशियायाः वायांगसाहित्ये भारतीयनाट्यपरम्परायाः प्रभावः 28-41

– डॉ. ललितपाण्डेयः

5. जैनसंस्कृतौ पर्वाणि 42-47

– प्रो. कुलदीपकुमारः

हिन्दी विभाग

6. भाट्टमत में श्रुतार्थापत्ति प्रमाण का निरूपण 48-54

– डॉ. ठाकुर शिवलोचन शाण्डिल्य

7. लास्य-स्वरूप निरूपण 55-66

– डॉ. मुकेश कुमार मिश्र

8. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा एवं प्रकारों का अध्ययन 67-74

– डॉ. सुरेन्द्र महतो

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा एवं प्रकारों का अध्ययन

- डॉ. सुरेन्द्र महतो*

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।[1]- इस कथन के अनुसार श्रीमद्भगवद्गीता को भलीभाँति पढ़ लेने/समझ लेने पर समस्त ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। अर्थात् गीता को समझ लेने पर अन्य शास्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं है तथा गीता को नहीं समझने पर भी अन्य शास्त्रों में समय लगाना नासमझी है। अतः भारतीय वाङ्मय में श्रीमद्भगवद्गीता ही एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसका अनुवाद विश्व की अनेकों भाषाओं में उपलब्ध होता है। इस ग्रन्थ को जो व्यक्ति जिस भाव से अध्ययन करता है, उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होती है। अर्थात् यह ग्रंथ सम्पूर्ण भारतीय शास्त्रों का निचोड़ है। इसकी प्रत्येक आवृत्ति में एक नई अनुभूति की प्राप्ति होती है। श्रीमद्भगवद्गीता के 61 श्लोकों में बुद्धि शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है। बुद्धि शिक्षा-मनोविज्ञान की दृष्टि से ही नहीं अपितु भारतीय दर्शन का भी केन्द्र बिन्दु रहा है। बुद्धि का सन्दर्भ व्याकरण, दर्शन, साहित्य आदि में भी प्राप्त होता है। बुद्धि के अतिरिक्त अन्य मनोवैज्ञानिक तथ्यों जैसे- ध्यान, सीखना, व्यक्तित्व, स्मरण, विस्मरण, स्वप्न, रुचि, अभिवृत्ति आदि भी प्राप्त होते हैं, जबकि मेरा उद्देश्य यहाँ श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा तथा भेद को आधुनिक मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित करना रहा है।

तकनीकी शब्द

व्यवसायात्मिका	- निश्चयात्मिका अर्थात् निर्णयात्मिका।
सात्त्विक	- सत्त्व गुण से सम्बद्ध
राजस्	- रजो गुण से सम्बद्ध
तामस्	- तमो गुण से सम्बद्ध

* सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-16

1. म.भा., भीष्मपर्व, अ. 43/1 एवं संक्षिप्त गीता पृ.-8

ISSN-0970-7603
A Peer Reviewed Journal

भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका

BHARATIYA SHIKSHA SHODH PATRIKA

वर्ष 39, अंक 1, जनवरी–जून 2020
Vol. 39, No. 1, January-June 2020

सत्यं शिवं सुन्दरम्

भारतीय शिक्षा शोध संस्थान
सरस्वती कुंज, निराला नगर, लखनऊ–226020 (उत्तर प्रदेश)
Bharatiya Shiksha Shodh Sansthan
Saraswati Kunj, Nirala Nagar, Lucknow-226020 (Uttar Pradesh)
Ph. No. 0522-2787816, E-mail: sansthanshodh@gmail.com
Website : www.bssslko.org.in

विषय-सूची
Contents

* भारतीय शिक्षा शोध संस्थान के प्रकाशन 2
* सम्पादकीय / Editorial 3

शोधपत्र / Research Articles

* श्रीमद्भगवद्गीता में शान्ति-शिक्षा का स्वरूप	डॉ. सुरेन्द्र महतो	6
* Nature of Vedic Education	Dr. Awdhesh Srivastava Garima	12
* Innovations in Teaching and Learning	Dr. Pravesh Kumar	18
* अभिविन्यास पाठ्यक्रम में भाग लेने वाली महिला प्रतिभागियों का आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन	डॉ. सरोज राय	24
* उच्च शिक्षा का निजीकरण : चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ	डॉ. निरपेन्द्र कुमार सिन्हा	29
* Study of Emotional, Social and Educational Adjustments of Senior Secondary Students from Moradabad City	Prof. Rajkumari Singh Mrs. Priyanka Gupta	34
* Open Educational Practice: An Attitude of Teacher Towards The Use of Information Communication Technology in Higher Education of Senior Secondary Students from Moradabad City	Akhand Mishra	41
* गुणात्मक शोध में व्यष्टि अध्ययन पोषित केन्द्रित समूह परिचर्चा	अनामिका सिंह राठौर प्रोफेसर निधि बाला	48
* Educational Thoughts of Gita	Prof. S.K. Dwivedi	55

विविध / Miscellaneous

समसामयिक गतिविधियाँ / Current Events 60

शोध आलेख प्रकाशनार्थ भेजने के पत्र का प्रारूप 61

Format of Letter for Sending Research Article/Research Note for Publication 62

लेखकों के सूचनार्थ / Information for Contributors 63

श्रीमद्भगवद्गीता में शान्ति-शिक्षा का स्वरूप

* डॉ. सुरेन्द्र महतो

Abstract

"After gaining knowledge, one attains ultimate peace" - according to this sentence of Shree Madbhagvad-Gita, knowledge is the means to find peace, which is a universal truth. Every nation, society, community and individuals of world, every creature wants peace. No one wants turmoil or war. Feared by the terror of war, humanity embraces religion and peace, which contains the feeling of compassion, non-violence and mercy for all creatures. Hiroshima-Nagasaki, Israel-Palestine, Venezuela, midle-east nations can be cited in this context.

Foundation of UNO after Hiroshima-Nagasaki is an example of humanity's seeking peace. Emperor Ashoka's embracing Buddhism after Kalinga war is also an example, which is ample to prove that each human being's final wish is to attain peace through right knowledge or wisdom. Everyone needs to make an effort collectively in this direction, because peace is sought by everyone. It is rightly said, "Peace for all, all for peace." From the time immemorial, Indian wisdom talks about peace-

Let all be happy! Let all be healthy!
Let all see well! Let no one suffer!

प्रसिद्ध चीनी कथन है-

"If you are planning for a year, sow rice
If you are planning for a decade, plant trees.
If you are planning for a lifetime, educate people."

अर्थात् सुस्थिर विकास के लिए लोगों का शिक्षित होना परम आवश्यक है। लोगों को शिक्षित करने के लिए शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करना आवश्यक होता है जो देश-काल व परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तनशील होता है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र अथवा समाज का परिचायक है जिससे राष्ट्र समृद्ध व सम्पन्न होता है। कहा भी गया है–**किं-किं न साधयति कल्पलतेव विद्या'** अर्थात् विद्या से क्या क्या नहीं प्राप्त किया जा सकता है। यहाँ तक कि शान्ति और सुख ही नहीं परम् शान्ति अर्थात् मोक्ष को भी शीघ्रता से ज्ञान के द्वारा प्राप्त करने का तरीका गीता में वर्णित है। ज्ञान के कई समानार्थक शब्द प्रयोग में लाये जाते हैं जैसे- विद्या, शिक्षा आदि। लेकिन तीनों ही शब्द स्थान-काल-प्रसंग आदि के आधार पर विविध अर्थों के द्योतक होते हैं। कठोपनिषद् में यम-नचिकेता संवाद में विद्या दो प्रकार की बताई गई है- परा और अपरा अर्थात् आध्यात्मिक और भौतिक। शिक्षा को शास्त्रों में विद्या अथवा ज्ञान प्राप्ति का साधन बताया गया है। **'स्वरवर्णाद्युच्चारणं शिक्ष्यते सा शिक्षा'**, अर्थात् उच्चारण सिखाने की प्रक्रिया शिक्षा है। शिक्षा को वेद अर्थात् ज्ञान प्राप्ति का साधन कहे जाने से इसे वेद अर्थात् ज्ञान का अंग वेदांग कहा गया है।

वर्तमान समय में शिक्षित का मतलब सूचना संग्राहक के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है जिससे व्यक्ति जीवन में भौतिक सुखों को प्राप्त करने में सक्षम तो हो पाता है, पर उनके आन्तरिक जीवन में अस्थिरता एवं अशान्ति का

* असिस्टेंट प्रो., शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110016

RNI No. : DELSAN/2011/38660 ISSN 2321 - 4937 DL(E)-20/5534/2021-23

Posting Date.: 4-5, 19-20 of Every Month

॥ ओ३म् ॥

नेता यस्य बृहस्पतिः प्रहरणं
वज्रं सुराः सैनिकाः स्वर्गो
दुर्गमनुग्रहः कि
हरेरैरावतो वार
इत्यैश्वर्यबलान्वि
बलभिद्भग्नः प
तद्युक्तं ननु दैवमेव शरणं
धिग्धिग्वृथा पौरुषम्॥४४॥

(नीतिशतकम्)

सत्यनिष्ठा जयेल्लेखनी निर्भया

संस्कृत – संवादः

पाक्षिकं समाचारपत्रम्

॥ ओ३म् ॥

कर्मायत्तं फलं
पुंसां बुद्धिः

(नीतिशतकम्)

डॉ. सुरेन्द्र महतो
शिक्षा शास्त्र विभाग,
श्री ला.ब.शा.संस्कृत विद्यापीठ,
कटवारिया सराय, नई दिल्ली-16

संपादकीयकार्यालयः ए-२/३२, वजीराबाद मार्गः, भजनपुरा, देहली-११००५३, दूरभाषः ९३११०८८

ई-मेलः sanskritsamvad@gmail.com वेबसाइटः www.sanskritsamvad.com मूल्यम्-रू. १०

卐 वर्षम्-११ 卐 अंकः-२३ (२६३) 卐 १ जूनमासः २०२२तः १५ जूनमासः २०२२ पर्यन्तम् 卐 विक्रमसंवत्-२०७९ 卐 सृष्टि ...,५३,१२२ 卐 पृष्ठम्-८

पतंजलिविश्वविद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः 'अभ्युदयः- २०२२' इति सम्पन्नम्

हरिद्वारम्। पतंजलिविश्वविद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः मंगलवासरे परिसरस्य सभागारे समायोजितः। कार्यक्रमस्य शुभारम्भं पतंजलिविश्वविद्यालयस्य कुलाधिपतिः स्वामिरामदेवः, कुलपतिः आचार्यः बालकृष्णः दीपस्य प्रज्ज्वलनेन कृतवन्तौ। स्वामिना उक्तं यत् विकल्परहितः संकल्पः अखण्डः

आचार्यरमाकान्तशुक्लवर्याय श्रद्धाञ्जलिसभा

नवदेहली। 23.05.2022 तमे दिनाङ्के अग्रसेनभवने विकासपुर्यां दिल्ल्याम् आचार्यरमाकान्तशुक्लवर्याय श्रद्धाञ्जलिसभा अन्वष्ठीयत। दिवंगतस्य आचार्यरमाकान्तशुक्लस्य त्रयोदशाहावसरे दिनस्य पूर्वभागे रमालये त्रयोदशाहविधिपूर्वकं होम-ब्राह्मणभोजनादि अभूत् तदनु

च अग्रसेनभवने ब्रह्मभोजपूर्वकं श्रद्धाञ्जलिसभा समायोज्यत। श्रद्धाञ्जलिसभायां आचार्यरमाकान्तशुक्लस्य पारिवारिकजनाः, संस्कृतजगतः विद्वांसः, ...

सम्पादकीयम्

सम्मान्याः सुरभारतीमुपासकाः!

सादरं नमोनमः।

सनातने हिंदू धर्मे षोडश संस्काराणाम् उल्लेखः कृतः। मान्यतानाम् अनुसारं संस्कारे एते गर्भाधान संस्कारात् आरभ्य अंत्येष्टि क्रियां यावत् भवन्ति । कर्मकांड मनुष्याणाम् इच्छितकामनायाः कल्याणस्य, लौकिक सुख शांतेः मनसि संकल्पितानाम् अनेकेषाम् इच्छानां पूर्त्यर्थं साधनम् अस्ति स अस्माकं धर्माचार्यैः मनुष्याय यावन्तः धर्माः कथिताः ते सर्वे अपि कर्मकांडे समाहिताः। अस्य उल्लेखः शास्त्रेषु अपि कृतः वर्तते। प्राचीनैः ऋषिभिः मुनिभिः शास्त्राणां द्वारा प्रदत्तेन कर्मकांडेन स्वजीवनं यज्ञमयं निर्मितम्। कर्मकांडः अस्मद् सनातन संस्कृतेः अभिन्नम् अंगं मान्यते। बिना पूजा पाठेन कर्मकांडस्य नैव किञ्चन उत्सवः उत्सव पूर्णतां याति । शास्त्रानुसारं केवलं ब्राह्मणः एव कर्मकांडं कारयितुं अधिकारी मान्यते किंतु ब्राह्मण वर्णे जन्ममात्रेण नैषः कर्मकाण्डं कारयितुं योग्यः एवं नास्ति। कर्मकांडकर्तृभ्यः आचार्येभ्यः पुरोहितेभ्यः शास्त्रैः केचन मर्यादा नियमाश्च सुनिश्चिताः । यदि केनचित् कारणेन कर्मकांडं कर्तुं विप्रः न उपलब्धः तर्हि केवलं ब्राह्मण वर्णे जातेन विप्रेण कर्मकांडः संपादयितुं शक्यते । शास्त्रानुसारं तिलकं, शिखा, यज्ञोपवीतं, त्रिकालसंध्या, गायत्रीजपं चेत्यादीनां कर्तारः येषां मंत्रोच्चारणं शुद्धं अस्ति ते विप्रः एव पुरोहितकर्मणे उत्तमाः मान्यते ।

अस्माकं देशे सनातन पद्धतेः अनुसारं कर्मकांडस्य पुरोहितस्य नास्ति कापि न्यूनता स परंतु अधिकांशेन पुरोहितः स एव येन संस्कृत निहित कर्मकांडस्य शिक्षा विधिवद्रूपेण अधीता स्यात् । केवलं पारंपरिकरूपेण वंशानुक्रमेण कर्मणि संलग्नः अस्ति बहुधा तेषाम् अज्ञानम् अस्याः कर्मकांडपद्धतेः उपहासस्य कारणं भवति । अद्य देशस्य शतशः संस्कृत विद्यालयेषु विश्वविद्यालयेषु च कर्मकांडस्य विधिवत् शिक्षा दीयते । सहस्रं गुरुकुलानि अस्मिन् कार्ये संलग्नाः स हिंदू धर्मे आस्था , वैज्ञानिक दृष्टिकोणः , अस्माकं सनातन जीवन शैल्याः आधारः अस्याः कर्मकांड पद्धतेः अपेक्षा विदेशेषु अपि अस्ति । अतः अस्य कर्मकाण्डस्य शिक्षा उच्च स्तरीयां निर्मातुं दृष्टिकोणेन अङ्गीकरणीया वर्तते।

-सम्पादिका

॥ वेद वाणी ॥

'पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम् ।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः ॥'

'A rich man should certainly give money to a poor man that seeks alms and make him happy. He should see far and remember merits of such an act of his- here and hereafter. Wealth doesn't remain fixed at one place or with one person. It changes hands like a moving wheel.'

The Rig Veda 10.117.5

'एकपाद्भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपात्त्रिपादमभ्येति पश्चात् ।
चतुष्पादेति द्विपदामभिस्वरे सम्पश्यन्पङ्क्तीरुपतिष्ठमानः॥'

'A person with one unit of wealth seeks more wealth from the one with two. The man with two units of wealth goes to the one with three. And the one with four units approaches someone with more. A chain of relationships has been made thus; a person with smaller wealth expects more from the one who is better off. A very rich man may become a poor person one day. So never be proud of your wealth. It would be proper to be generous and charitable toward the deserving and guests.'

समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः सम्मातरा चिन्न समं दुहाते ।
यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः॥

'Lord Indra who fulfills desires of worshippers, may protect us in our battles of life with our enemies and take us to safety like a boat that carries travellers across a river.'

The Rig Veda 8.16.11

'स नः शक्रश्चिदा शकद्दानवाँ अन्तराभरः ।
इन्द्रो विश्वाभिरूतिभिः ॥'

'Though both of our hands look alike, they don't have the same capacity for doing things. Two cows calving at the same time do not yield the same quality and quantum of milk. Twins too do not have similar strength. And two persons born in the same family will not have the same generosity.'

The Rig Veda 117.9

'भारतीयज्ञानपरम्परायां सामाजिकप्रबन्धनम्'

-डॉ. सुरेन्द्र महतो
सहायकाचार्य, शिक्षापीठम्
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली-16

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः इति- गीतोक्तवचनम् भारतीयज्ञानपरम्परायाः गाम्भीर्यमेव न अपितु आधुनिकसमाजस्य आवश्यकता तथा च वैज्ञानिकतां दर्शयति। भारतीय-ज्ञान-प्रणाली स्वीय-विश्वसनीयतायाः प्रयोगधर्मितायाः न्यायपूर्णतायाः तथा चलनीतायाः कारणेन अखिलविश्वं स्वाभिमुखं आकृष्टमानः अस्ति। भारतीय ज्ञानस्य मुख्यानि स्रोतांसि वेदाः, पुराणानि, इतिहासाः, शिक्षाः, कल्पाः, निरुक्ताः, ज्योतिषशास्त्रम् संहितादयः प्रमुखाः सन्ति। ये अत्र विराजमानाः सामाजिक-सम्पन्नतायाः तथा च प्रयोगधर्मितायाः परिचायकौ स्तः। यस्याभ्यन्तरे आधुनिक वैज्ञानिकतायाः बीजानि प्राप्नुवन्ति। तानि बीजानि खगोलविज्ञानस्य, गणितस्य, भौतिक्याः, रसायनस्य, चिकित्साविज्ञानस्य, आचारशास्त्रस्य, प्रबन्धनस्य, प्रोद्यौगिक्याः एव भवितुं शक्नुवन्ति । राष्ट्रीयशिक्षानीतिः2020 इत्यस्मिन् तां विषयं केन्द्रे स्थापितम्। येन अग्रिमवंशाः स्वीयम् गौरवशालिनः अनुभवन्तु । तथा च तस्य महत्ताम् विश्वस्तरे प्रकटने स्वीय प्रधान भूमिका वोढेयुः। अस्मिन् पत्रे भारतीय ज्ञान परम्परायाम् प्रबन्धनम् विशेषतया सामाजिकप्रबन्धनस्य तत्वानि उपस्थापितकरणस्य प्रयत्नं कृतमस्ति।

सूचनानां सार्थकाः तथा एकस्मिन् संविन्यासे संगठितप्रतिरूपं ज्ञान कथ्यते । भारतीय-ज्ञानस्य मुख्यानि स्रोतांसि वेदाःसन्ति। ते वेदाः चत्वारः सन्ति। ये सहस्राणि वर्षाणि प्रागेव तस्मिन् रूपे विराजमानाः सन्ति। ये वेदाः मानवानां लौकिकं पारलौकिकं च कल्याणस्य मार्गप्रशस्यते।यत्र सामाजिकप्रबन्धस्य मुख्यानि सूत्राणि प्राप्नुवन्ति।यथा- ऋग्वेदस्य पुरुषसूक्तस्य प्रथमः मंत्रः- 'सहस्त्रशिर्षापुरुषः' अस्ति। अयं मंत्रःचतुर्षु वेदेषुकिञ्चिद् मात्राभेदेन सह उपलभ्यते। यत्र विराट् पुरुषस्य संकल्पना अस्ति। यःअस्मिन् ब्रह्माण्डे अनन्तशक्तेः परिचायकोऽस्ति।ततःअग्रे-आधुनिककालविभाजनस्य सिद्धान्तान् परिपुष्यते।'ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्....। अर्थात् ज्ञानम् (अध्ययनाध्यापनयोः) चिन्तनशीलः एकः वर्गः तत्रैव द्वितीयः शान्तेः पोषकः तथा रक्षाकार्ये संलग्नः विशिष्टः वर्गः, तत्रैव भरण-पोषणकर्ता एकः वर्गः तथा सेवार्थे एकः वर्गः। एते शिरोभुजजंघ पादाः सन्ति।एतेषु समन्वयमेव कस्यचिद् कार्यस्य पूर्णतां करोति। तथा समन्वयाभावकारणेन कार्येषु बाधाः आगच्छन्ति तथाःकार्यअसफलं भवति। कार्यमिदं वितरणं प्रबन्धनस्य प्रमुखसिद्धान्तेषु एकः अस्ति। उक्त सिद्धान्तःयथा ब्रह्माण्डं तथा पिंडः' इतिअस्योपरि आधारितः अस्ति। तस्य श्रीमद्भगवद्गीतायाम् वर्णविभाजनस्य नाम्ना कथितमस्ति। विभाजनस्यास्य गुण कर्मणोः आधारोपरि निश्चयं कृतमस्ति । रामराज्ये अपितदित्थम् उदाहरणानि प्राप्नुवन्ति । श्रीरामः कुमारभरतम् अयोध्यायाः राजप्रबन्धनस्यविषये प्राश्निकानिर्देशयन् पृच्छति।यत् स्व-स्व कर्मषु निरताः ब्रह्मक्षत्रिय विशाम् सहस्रसंख्यात्मकाः तत्र सदा निवसन्ति।ते सर्वे महोत्साही जितेन्द्रियः श्रेष्ठः च सन्ति।

आचार्यः विष्णुगुप्तः(कौटिल्यः) अर्थशास्त्रस्य प्रथमाधिकरणस्य चतुर्थाध्यायस्यएकोनविंशति तमे तथा तृतीयाधिकरणस्य प्रथमाध्यायस्यत्रिंशत् तमे सूत्रे चतुर्णां वर्णानाम् स्व-स्व कर्मणि निरताः सन् नृपस्य प्रभुत्वम् प्रदर्शितं वर्तते। पुनः स्मृति ग्रन्थानां प्रतिनिधिभूतः मनुस्मृतेः द्वादशाध्याये प्रायशः2,685 पद्येषु वर्णानां कर्तव्याकर्तव्ययोः वर्णनं कृतमस्ति। तदित्थम् अन्येषु ग्रन्थेषु अपि द्रष्टुम् शक्यते। समाजस्य राष्ट्रस्य वा सम्यक् संचालनाय भारतीये वर्णेषु विभक्तः सन् नपि सर्वे पारस्परिक सौहार्देन राष्ट्रप्रेम्णा च स्वीयकर्तव्यानाम् निर्वहणम् कृतमस्ति। तेन सह विश्वस्य समस्तमानवसमुदायान्वीयकर्तव्यम् अथवा चरित्रमाध्यमेन शिक्षाप्रदानम् कृतमस्ति। अतः भारतीयवर्णव्यवस्था आधुनिकप्रबन्धनस्य सिद्धान्तायः अनुकरणीयः अस्ति।

प्रतिव्यक्तेः जीवने भारतीयाश्रम व्यवस्थानाम् तथा संस्काराणामस्वीय विशिष्टम् महत्त्वमस्ति। यः सामाजिकप्रबन्धनान्तर्गते स्वात्मप्रबन्धस्य तथा कालप्रबन्धस्य उत्तमम्उदाहरणम् प्रस्तौति। 'जीवेम शरदः शतम्, पश्येम शरदःशतम्' इत्यधिकृत्य व्यक्तेः जीवनकालान्शतायुः ज्ञात्वा तान् चतुर्षु भागेषु विभाज्य तद्नुरूपेण कर्तव्यानाम् निर्वहनस्य संकल्पना कृतमासीत। अस्योदाहरणम् मनुस्मृतेषष्ठअध्याये प्राप्नोति। यत्र स्पष्टतया चतुर्णाम् आश्रमाणाम् चर्चाः इत्थमस्ति- 'ब्रह्मचारी, गृहस्थः, वानप्रस्थः तथा यतिः। एतेषामाधारः गृहस्थः अस्ति। एतेषु प्रथमः आश्रमःब्रह्मचर्यः नाम्ना प्रसिद्धोऽस्ति। यः जीवनस्यप्रथमे कालेअर्थात् पंचविंशति वर्षाणि पर्यन्तम् ज्ञानार्जनाय अभवत्। पुनः विवाहसंस्कारेण गृहस्थाश्रमे प्रवेशः भवति स्म।अयं आश्रमःसर्वेषाम् आश्रमाणाम् पोषकः मन्यते। यत्र समाजस्य निर्माणाय सतत् रूपेण मातापितृभ्याम् संतानोत्पत्तिःगुरुदक्षिणार्थे धनोपार्जनम् अतिथिब्रह्मचारीभ्याम् पोषणव्यवस्था मुख्योद्देश्यानि आसन् । पुनः वानप्रस्थे सन्यासरूपे स्वीय सामाजिक-कर्तव्यान् शान्तिपूर्णं कृतमासीत। इत्थम् आश्रमव्यवस्था भारतीयसमाजस्य दृढताम् प्रददाति स्म। प्रतिव्यक्तिः मात्रैव राष्ट्रस्य कृते जीवनम् यापयति न तु स्वस्य कृते।अद्यत्वे सम्पूर्णगुणवत्ताप्रबन्धने संगठनस्य सर्वान् सदस्यान् स्वयमेवन, अपितु सम्पूर्णसंगठनं प्रति दायित्वनिर्वहनाय कथयति।

व्यक्तेः समाजस्य अनुकूलनिर्माणाय गर्भाधानतःप्रारभ्य श्राद्ध-पर्यन्तं संस्काराणाम् एका वृहद्शृंखला वर्तते। या व्यक्तेः अन्येभ्यः जीवेभ्यः भिन्नः विवेकशीलव्यक्तिरूपे परिवर्तिते सहायकः भवति। एभिः संस्कारैः व्यक्तेः मात्रैव उन्नयनं न भवति अपितु समाजे परस्परं स्नेहप्रकटनाय अवसरं अपि ददाति स्म। व्यक्तेः जीवने संस्काराःउत्सवरूपे आयोजितेन द्वितीयस्मिन् परस्परं सहयोगं तथा च जीवनयापने साधनस्यापि सहायकः आसीत्तथा अद्यापि अस्ति। उदाहरणे- विवाह-संस्कारः नेतुं शक्यते।अयं संस्कारः समानरूपेण सर्वेषु धर्मेषु, लिंगेषु,वर्गेषु, जातिषु प्रायः अनिवार्यतया सम्पादितम् क्रियते। अत्र विशेषतया (भारतीय) भारतीय-हिन्दु-ग्रामीण-समुदायेसम्पादनविषये चर्चा अपेक्षितः वर्तते। यम् आर्षविवाहम् कथ्यते। संस्कारस्य सम्पादने समाजस्य सर्वेषां जनानां आवश्यकता अपेक्षिते वर्तते।यथा- मन्त्रोच्चारार्थं वेदीयम् (फेरे) सप्तपदी वा कृतेब्राह्मणस्य सहयोगार्थं नापितः, पात्रनिर्माणार्थं एकः विशेषः वर्गः वस्त्रालंकारार्थं एकः अन्यवर्गः। इतोऽधिकम् अतिथिसत्कारायसाज-सज्जादिकसामग्र्याः आपूर्तिं भिन्नं वर्गेण भवतीति। एतावदेव न अपितु विभिन्न प्रकारकाः प्राकृतिककृत्रिमयोः साधनयोः अपि वर्गेषु विभिन्न मासेषु अस्माकं क्षेत्रेषु उत्पादैः निर्मियन्ते। यम् प्रयोगः अपेक्षितः मन्यते। इत्थम् अस्माकंसंस्काराः मात्रैव सामाजिक-प्रेम निर्माणाय एव सहायकः नास्ति। अपितु सर्वेषाम्जीविकार्थे अपि सम्बन्धितः अस्ति। यः भारतीय अर्थव्यवस्थासंरक्षणाय अपि सहयोगी मन्यते। इत्थमेव भारतीयविविधपर्वाणामपियुक्तियुक्तत्वं भारतीयसमाजस्य एकस्मिन् सूत्रेनिबन्धने क्षमः अस्ति।

राष्ट्रीयशिक्षानीतिः2020 इत्यस्मिन्भारतीयज्ञानानि परम्पराः, लोकभाषाः, लोककलाः तथा च क्षेत्रिय ज्ञानानि एवं कलायाः आधुनिकवंशस्य परिचयार्थं विशेषं बलं दीयते स्म। येन ते ज्ञानविज्ञानम् एवं परम्परादिषु गौरवान्वितम् अनुभवितुं शक्यते। तस्मिन् क्रमे आधुनिकप्रबन्धनशास्त्रस्य सम्पूर्ण-विश्वस्मिन् नवीनतम तथा च आकर्षकविषयस्य रूपे स्वीक्रियते। उक्तवर्णे भारतीयज्ञानपरम्परायां निहितप्रबन्धनस्य सिद्धान्तान् उदाहरणरूपे प्रस्तुतःक्रियते स्म। भारतीय समाजस्य संचालनम् प्रक्रियया सम्बद्ध विविध संस्काराः पर्वाः उत्सवाः भारतीयवाङ्मयेपरिवेष्टित विविध आधुनिकज्ञानस्य स्रोतांसिच केचित् प्रमुखान् अंशान् उद्धृतोऽस्ति। यः भारतीयज्ञानपरम्परायां भारतीयसामाजिकप्रबन्धनं सम्पुष्टः करोति। इत्थम् अन्याः विविध आधुनिकतमाः विषयाः (संवमेव कपेबपचसपदम) अनुशासनस्यम् भाषि वा अस्माकं भारतीये-वाङ्मयेसामाजिक-परम्परासु, व्रतेषु,उत्सवेषु विद्यमानाः सन्ति।आवश्यकं अस्ति तेषां अन्वेषणंकृत्वा विश्वपटले उपस्थापनाय। येन सम्पूर्णविश्वः तान् परिचयंप्राप्नुवन्तु अस्माकं आधुनिकाःभविष्ये अस्माकं वंश परम्पराः च गौरवान्विताः अनुभूयन्ते ।

सन्दर्भ-

1. राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020- हिन्दी
2. श्रीमद्भगवद्गीता- गीताप्रेस, गोरखपुर
3. श्रीवाल्मिकीय रामायणम् .. ..
4. मनुस्मृतिःपं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी - 1917
5. ऋग्वेद संहीता
6. यजुर्वेद संहिता
7. शिक्षा में सम्पूर्णगुणवत्ता प्रबन्धन - प्रो. मर्मर मुखोपाध्याय, नीपा-2005
8. समाज के सामान्य सिद्धान्तश्च आ.के. मुखर्जी

Vol. 3 No. 1 (2024): जम्बूद्वीप - the e-Journal of Indic studies

Published: 2024-06-25

Articles

The The need to expand the Sanskrit Literature

Prof. C. Upender Rao

साहित्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना का भाव

Dr.Purushottam Patil

षडङ्गस्वरूपम्

Amit Kumar Sahoo

Women in the Jātakas

Categories of Representation and the Subject of Sexuality

ROHA ROMSHA

प्राचीन भारत के प्रमुख संवत्: एक अवलोकन

Dr. Mukesh Kumar Mishra

"Exploring the Legacy: Chinese Monk Translators in Historical Context"

Brijeshwari Rukwal

Tripathi, Amarendu "Kautilya's Arthshastra and Its Contemporary Relevance in Indian International Relations"

Amarendu Tripathi

शिक्षणाधिगमस्य भारतीया परम्परा

Dr. Surendra Mahto

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का सामुद्रिकशास्त्रीय अध्ययन

Dr. Neeraj Kumar Joshi

पूर्वमीमांसा सम्मत व्याख्याशास्त्र की अपेक्षा-उपेक्षा

Dr. Anoop Pati Tiwari

Current Issue

ATOM 1.0

RSS 2.0

RSS 1.0

Information

For Readers

For Authors

For Librarians

शिक्षणाधिगमस्य भारतीया परम्परा

Bhartiya Tradition of Teaching & Learning

डॉ. सुरेन्द्रमहतो
सहायकाचार्यः, शिक्षापीठम्,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

शिक्षणम् अधिगमश्च एका नैसर्गिकीक्रिया अस्ति। एषा क्रिया प्राणिषु भवति। प्राणिनः क्रियायाः एतस्याः सम्पादनं स्वेच्छापूर्तये आत्मसंतुष्टये च कुर्वन्ति। प्राणिषुमानवः श्रेष्ठः। अतः मानवेषु एषा क्रिया प्रकृष्टरूपेण भवति। शिक्षणस्य क्रियां,अधिगमस्य क्रियां च मेलयित्वा शिक्षणाधिगमप्रक्रियारूपेण ज्ञायते। शिक्षणाधिगमविषये निखिलेऽपि विश्वे शिक्षाशास्त्रिणः प्राचीनकालादेव मननशीलाः सन्ति। एषा क्रिया स्वभाविकी योजिता च भवति। लौकिकी शास्त्रीया च, इत्युक्ते औपचारिकीअनौपचारिकी चप्रसिद्धा। शिक्षणाधिगमविषये भारतीयपरम्परा समृद्धा वर्तते। भारतीयवाङ्मये विषयेऽस्मिन् बहुषु स्थलेषु लिखितं वर्तते। यथा- आचार्यः पूर्वरूपम्। अन्तेवासी उत्तररूपम्। विद्या सन्धिः इति विद्यम्।[1]इत्युक्ते ज्ञानप्राप्तये पक्षत्रयस्य उपस्थितिः अनिवार्या। श्रीमद्भगवद्गीतायां ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता।[2] अन्यत्रापि आत्मविषयकं चिन्तनं परिस्थितिषु अनुकूलनाय चिन्तनं, इतिरीतिद्वयं प्रचलितं वर्तते। शास्त्रीया (वैदिकी) लौकिकी व्यावहारिकी च। वैदिकी श्रुत्यादिः। लौकिकी पञ्चतन्त्रहितोपदेशादिः। सर्वत्र शिक्षणाधिगमस्य भारतीयस्वरूपं सन्निहितं वर्तते। परंशोधपत्रेऽस्मिन् किञ्चित् प्रमुखसन्दर्भ एव चर्चिष्यते। यथा- व्याकरणसिद्धान्तकौमुद्याः क्त्वा[3]णिच्[4]शिक्षणाधिगमे कथं प्रयोगः।

---

[1]तै.उ. (शिक्षावल्ली)

[2]श्रीमद्भगवद्गीता 18.18

[3]समानकर्तृकयोः पूर्वकाले: 3.4.21

[4]णिचश्च 1.3.74

Volume 3, Issue 1, 2024, p. 88-96, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

Vol. 2 No. 1 (2023): जम्बूद्वीप - the e-Journal of Indic studies

Published: 2023-05-30

Articles

[वाजसनेयि संहिता में उभयपदप्रधान एवं मत्वर्थीय समास]
Dr. Nisha Goyal

[शुक्रनीति में वर्णित पर्यावरण संरक्षण]
Lajja Bhatt

[UNDERSTANDING DESHA (BIOLOGICAL DISTRIBUTION OF HABITATS) THROUGH THE LENS OF HEALTH AND WELLNESS]
ANKUR KUMAR TANWAR

[काव्यपाक]
Dr. Chandrashekhar Tripathi

‘वासकसज्जा ज्योत्सना’ आडम्बरों से मुठभेड़ करती कविताएँ

Dr.Arun Kumar Nishad Arun

बीसवीं सदी के भारत के आध्यात्मिक समाज सुधारक स्वामी सहजानंद सरस्वती : एक मूल्यांकन

Lucky Sharma

Vipassana Yoga: it’s Role in the Life of Freedom Fighter Freda Bedi

Brijeshwari Rukwal

भारतीय ज्ञान परम्परा और शोध

Hrushikesh Padhan Hrushikesh Padhan

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि के स्वरूप का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

Dr. Surendra Mahto

भारतीय कला और बौद्ध कला - एक तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Nishith Gaur

Current Issue

ATOM 1.0

RSS 2.0

RSS 1.0

Information

For Readers

For Authors

For Librarians

Make a Submission

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा एवं प्रकारों का अध्ययन

डॉ. सुरेन्द्र महतो
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

"गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।" [1]*- इस कथन के अनुसार श्रीमद्भगवद्गीता को भलीभाँति पढ़ लेने/समझ लेने पर समस्त ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। अर्थात् गीता को समझ लेने पर अन्य शास्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं है तथा गीता को नहीं समझने पर भी अन्य शास्त्रों में समय लगाना नासमझी है। अतः भारतीय वाङ्मय में श्रीमद्भगवद्गीता ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसका अनुवाद विश्व की अनेकों भाषाओं में उपलब्ध होता है। इस ग्रन्थ को जो व्यक्ति जिस भाव से अध्ययन करता है उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होती हैं। अर्थात् यह ग्रंथ सम्पूर्ण भारतीय शास्त्रों का निचोड़ है। इसकी प्रत्येक आवृत्ति में एक नई अनुभूति की प्राप्ति होती है। श्रीमद्भगवद्गीता के* ***61****श्लोकों में बुद्धि शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है। बुद्धि शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से ही नहीं अपितु भारतीय दर्शन का भी केन्द्र बिन्दु रहा है। बुद्धि का सन्दर्भ व्याकरण,दर्शन,साहित्य आदि में भी प्राप्त होता है। बुद्धि के अतिरिक्त अन्य मनोवैज्ञानिक तथ्यों जैसे- ध्यान,सीखना,व्यक्तित्व,स्मरण,विस्मरण,स्वप्न,रूचि,अभिवृत्ति आदि भी प्राप्त होते हैं जबकि मेरा उद्देश्य यहाँ श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा तथा भेद को आधुनिक मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित करना रहा है।*

तकनीकी शब्द -
व्यवसायात्मिका - निश्चयात्मिका अर्थात् निर्णयात्मिका।
सात्विक - सत्व गुण से सम्बद्ध
राजस - रजो गुण से सम्बद्ध
तामस - तमो गुण से सम्बद्ध

उद्देश्य -
प्रस्तुत पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1. बुद्धि की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. बुद्धि के सिद्धान्तों को स्पष्ट करना।
3. बुद्धि के प्रकारों को स्पष्ट करना।
4. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की परिभाषा का अन्वेषण करना।
5. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि के भेदों का अन्वेषण करना।
6. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि तथा बुद्धि की आधुनिक संकल्पनाओं का समन्वय करना।

मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु एवं चिन्तनशील प्राणी है। जिज्ञासा पूर्ति के लिए वह इधर-उधर भ्रमण करता रहा हैं परिणाम स्वरूप भोजन संग्रह करने से प्रारम्भ कर उसने चाँद-तारों तक पहुँच बना ली हैं। मानव सृष्टि के सभी प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान है अर्थात् यूँ कह सकते हैं कि बुद्धि ही एक ऐसी विशिष्ट तत्त्व मानव में अन्तर्निहित है जिस कारण वह श्रेष्ठता

---

[1]म.भा. भीष्मपर्व अ. 43/1 एवं संक्षिप्त गीता पृ.-8

Volume 2, Issue 1, 2023, p. 54-59, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

॥ ओ३म् ॥

'न तच्छस्त्रैर्न
नागेन्द्रैर्न ह्यैर्न पदातिभिः।
कार्यं संसिद्धिमभ्येति
यथा बुद्धया प्रसाधितम्।'
(पंचतंत्र)

कष्टेन हि गुणग्रामं
प्रगुणी कुरुते मुनिः।
ममता राक्षसी सर्वं भक्षयत्येकहेलया॥
(अध्यात्मसार - 08/03)

RNI No. : DELSAN/2011/38660   ISSN 2321 - 4937   DL(E)-20/5534/2024-26

Posting Date.: 4-5, 19-20 of Every Month

सत्यनिष्ठा जयेल्लेखनी निर्भया

संस्कृत – संवादः

पाक्षिकं समाचारपत्रम्

संपादकीयकार्यालयः ए-२/३२, वजीराबाद मार्गः, भजनपुरा, देहली-११००५३, दूरभाषः ९३११०८६७५१

ई-मेलः sanskritsamvad@gmail.com वेवसाइटः www.sanskritsamvad.com मूल्यम्-रू. १०/-

॥ ओ३म् ॥

त्यक्त्वा धर्मं च लोभं च
मोहं चोद्यममास्थिता।
युध्यध्वमनहङ्कारा
यतो धर्मस्ततो जयः॥
(महाभारत, भीष्म पर्व - 21/11)

रङ्कं करोति राजानं राजानं
रङ्कमेव च।
धनिनं निर्धनं चौव निर्धनं
धनिनं विधिः ॥ चाणक्यनीति)

卐 वर्षम्-१३ 卐 अंकः-२२ (३१०) नवदेहली 卐 १६ मईमासः २०२४तः ३१ मईमासः २०२४ पर्यन्तम् 卐 विक्रमसंवत्-२०८१ 卐 सृष्टिसंवत्-१,९६,०८,५३,१२४ 卐 पृष्ठम्-८

भगवन्नारायणस्य जयकारेण बद्रीनाथधाम्नः कपाटाः उद्घाटिताः

बद्रीनाथ। श्रद्धालूनां महता उत्साहेन अस्य धाम्नः कपाटोद्घाटनं जातम्। अनेन सह चार धाम यात्रा अपि शुभारब्धा। बद्रीनाथ धाम्नः पूर्वं धामत्रयस्य गंगोत्री , यमुनोत्री केदारनाथ इत्येषां द्वाराणि पूर्वमेव समुद्घाटितानि। तत्र प्रथमां पूजां प्रधानमंत्रिणो नरेंद्र मोदिनो नाम्ना अभवत्। प्रथमेह्नि 20000 तः अधिक भक्ताःपूजाम् अर्चनां च कृतवन्तः। परंपरानुसारं जोशीमठतः 25 किलोमीटरदूरं तपोवन ग्रामे स्थितं बद्री धाम, उरगमपर्वतद्रोणीस्थितं बंसी नारायणकपाटमपि बद्री धाम्ना सह उघटतिस स्थानीय महिलाभिः पारंपरिक संगीतेन सह एषा परंपरा अनुष्ठीयते। सर्वप्रथमं मंदिरे देवतानां कोषाध्यक्षः कुबेरः, नारायणसखा उद्धवः गाडूघड़ा च मंदिरे प्रविशन्ति। गर्भ गृहे कपाटोद्घाटनोत्तरम् अखंड ज्योति दर्शनं भवति । ततः महालक्ष्मीऽ मंदिरे विराजिता। सममेव कुबेरः उद्धवश्च यथा स्थानं विराजितौ।

शास्त्रकौशलं विशिष्टग्रन्थस्य अध्ययनाय अत्यन्तम् आवश्यकम्-कुलपतिः प्रो वरखेड़ी

दिल्ली। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालयस्य(दिल्ली) कुलपतिः प्रो श्रीनिवास वरखेड़ी अखिल भारतीय शास्त्र प्रशिक्षणाय 90 चयनितानां अभ्यर्थिनां प्रशिक्षणं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालयस्य राजीव गांधि

परिसरे, श्रृंगेर्यां, श्री रघुनाथ कीर्ति परिसरे,देव प्रयागे जयपुर परिसरे च सुनिश्चितम् । तेभ्यः हार्दिकवधपिनानि यच्छन् भारत सर्वकाराय आभारं व्यक्तीकृतवान् स उल्लेखनीयम् ,अष्टादशी परियोजनान्तर्गतस्य कार्यक्रमस्यास्य श्रीगणेशः जातः गया है। कुलपतिना उक्तं विश्वविद्यालयेन प्रतिवर्षं संस्कृत शास्त्र संरक्षणाय संबर्धनाय च यद् अखिल भारतीय शास्त्र स्पर्धा समायोजनं क्रियते स तामेव परम्परां सुदृढां कर्तुं महत्त्वपूर्णप्रकल्पः। परम्परायामस्यां छात्रच्छात्राः स्वस्य पूर्णसज्जतया भागं गृहीतुं संस्कृत शास्त्रं समग्रविश्वम् आधिक्येन चमत्कृतां कर्तुं शक्नुयात् कार्यक्रमस्य मुख्यातिथिः ,कर्णाटक विश्वविद्यालयस्य पूर्व कुलपतिः प्रो. के. ई. देवनाथन, कथितवान् यत् एतन्नवोन्मेषी शास्त्र प्रशिक्षणं संस्कृतमहत्ताम् इतोपि सम्यक्तया स्थापयिष्यति । प्रो ब्रज भूषण ओझा (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयः) कथितवान् यत् प्रशिक्षण कार्यक्रमे देशस्य मान्या संस्कृत विद्वान शास्त्र पिपासवः छात्रच्छात्राः प्रशिक्षणं दातुं कुलपतिना श्रीनिवास वरखेडीवर्येण नामिताः। शान्ति पाठेन कार्यक्रमस्य समापनमभूत् ।

पतंजलियोगपीठे "गर्भ-संस्कार-संतति-सर्जनम्" विषये एकदिवसीया राष्ट्रिया कार्यशाला आयोजिता

हरिद्वारम्। पतंजल्यायुर्वेदमहाविद्यालयचिकित्सालयः पतंजल्यनुसंधानपतंजलि विश्वविद्यालयः इत्यनयोःसंयुक्त तत्वाधाने "गर्भसंस्कारं" प्रत्याधारिता एक दिवसीया राष्ट्रिय कार्यशाला "संतति सृजनम्" इत्यस्य आयोजनं पतंजलि विश्वविद्यालयस्य सभागारे सम्पन्नम्। कार्यशालोद्घाटनं परम पूज्य स्वामी रामदेवः, आयुर्वेद शिरोमणि आचार्य बालकृष्णः विशिष्टातिथि डॉ. (प्रो.) कल्पना शर्मा तदीयायुर्वेदक्षेत्रे उल्लेखनीय कार्येभ्यः 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' प्रदत्तम्।

कार्यक्रम प्रारंभे पूज्य स्वामी रामदेवमहाराजः कथितवान् यद् भारत भूमि गौरवशालिनी आदर्श माताभिः सुसमृद्धा तासु जीजाबाई, पुतलीबाई, मदालसा, सीता च याभिः सुसंस्कारित सन्ततये आकारं दत्तवत्यः। पूज्य आचार्य बालकृष्णः मातृत्व महिमानम् उल्लिखन्नुक्तवान् यत् वेदिकग्रंथेषु षोडषसंस्काराः वर्णिताः । यत्र संस्कारत्रयं गर्भाधानं, पुंसवनं सीमंतोन्नयनं चेति जन्मतः पूर्वं भवति। यत्संयोजनं भावी शिशोः मातापितृभ्यां गर्भ रक्षा-भावनया क्रियते।

विशिष्टवक्ता डॉ. (प्रो.) कल्पना शर्मा कथितवती यद् आयुर्वेदस्य प्रमुखम् उद्देश्यं स्वास्थ्यं रोगनिरोधःतदुपचारश्च। आयुर्वेदः सा संजीवनी या जीवनाय आध्यात्मिक दृष्ट्या अलौकिक शक्तिन प्रददाति। कार्यक्रमस्य संचालनं डॉ. सुमन सिंहः डॉ. ग्रेसी सोकिया कृतवत्यौद्य धन्यवाद ज्ञापनं कुर्वन् प्रधानाचार्यः आयुर्वेदमहाविद्यालयस्य डॉ अनिल कुमारः कथितवान् यत् एतादृश व्याख्यानमालाः जीवनं समग्रतया जीवितुं नवीन दृष्टिं प्रददाति। अवसरेस्मिन्पतंजलि अनुसंधान संस्थानस्य वैज्ञानिकाः उपस्थिताः आसन्।

भारतीयवाङ्मये संवादविधिः

(Dialogue Methods in Bhartiya Vangmay)

-डा. सुरेन्द्र महतो
Dr. Surendra Mahto
School of Education,
SLBSNS University, New Delhi
mahto@slbsrsv.ac.in

संवादः व्यक्तेः दिनचर्याःप्रमुखं साधनं वर्तते । सः संवादः भाषया सम्पाद्यते । साहित्यस्य सर्जनं संरक्षणं च भाषया एव भवति। समाजस्य संस्कृतेश्च संरक्षणं साहित्येन भवति । समाजस्य तात्कालिकस्य ज्ञानविज्ञानस्य संरक्षणं साहित्येन भवति। साहित्यस्य अर्थः आङ्गलभाषायां (Literature) लिट्रेचर इति भवति । किञ्च भारतीयपरिप्रेक्ष्ये अस्यार्थः एकदेशपरिमितो भवति । भारतीयवाङमयमतिप्राचीनंविस्तृतं च वर्तते । साहित्यशास्त्रंतु अस्या एका विधा एव। राजघ्शेखरकृत काव्यमीमांसानामके ग्रन्थे-

अङ्गानिवेदाश्चत्वारो मीमांसान्यायविस्तरः ।
धर्मशास्त्रं पुराणानि विद्याश्चौताश्चतुर्दश ॥

अतः वाङ्मये वेदाः वेदाङ्घ्गानि, पुराणानि, दर्शनानि धर्मशास्त्रादयः, समागच्छन्ति। वेदारभ्य अधुनातनरचनापर्यन्तं सर्वाषां रचनानामाधारः सम्वाद एव । ऋग्वेदे विश्वामित्रनदी, पुरुर्वा-ऊर्वसी, यम-यमी आदयः, उपनिषत्सु अपि संवादः रामायणे, महाभारते पुराणेषु अन्येषु ग्रन्थेष्वपि संवादस्य प्राधान्यं वर्तते । नाट्यशास्त्रे दशरूपकादिषु ग्रन्थेषुः नाटकं रूपकं वा संवादात्मकं भवति इति निर्देशः वर्तते । संवादमाध्यमेन विषयतथ्यान् समाजिकेषु सरलतयासुगमरीत्या सद्यः एव अवगमयितुं बोधयितुं वा क्षमः । अतः सम्वादस्य महत्त्वम् अनुभूय न भारतीयमनीषीषु अपितु पाश्चात्य शिक्षाविद्षु अपि शिक्षणाधिगमस्य आधारस्वरूपं संवादं (Dialogue's) शिक्षणविधिरूपेण अङ्गीकृतम्। नूतनशिक्षानीत्यामपि भारतीयज्ञानविषये बलं प्रदत्तम्। अनेन भारतीयशिक्षणाधिगमपद्धतौ संवादविधेः प्रमुखं स्थानम् अस्ति। पत्रेऽस्मिन् विस्तृतरूपेण उदाहरणपूर्वकं

> पारिभाषिकशब्दाः -वाङ्मयम्, संवादः, शिक्षणविधिः, वेदाङ्गानि, शास्त्रम्, विद्यास्थानम्

अङ्गानि चतुरो वेदा मीमांसा न्यायविस्तरः ।
पुराणं धर्मशास्रञ्च विद्याह्येताश्चतुर्दश ।।3/6/28।।

आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चौव ते त्रयः ।
अर्थशास्त्रं चतुर्थन्तु विद्याह्यष्टादशैव ताः।।3/6/29।।वि .पु.

इत्युक्ते विष्णुपुराणे उल्लिखिते पद्ये भारतीयवाङ्घ्मयस्य विवरणं प्राप्यते । विषयेऽस्मिन् राजशेखरःव्यनक्ति -

" वाङ्मयमुभयथा शास्त्रं काव्यं च । पुनः शास्त्रं द्विधा-अपौरुषेयं पौरुषेयं चेति। अपौरुषेयं श्रुतिः । श्रुतिः पुनः द्विधा मन्त्राः ब्राह्मणं च ।विवृत्तक्रियातन्त्रा मन्त्राः । मन्त्राणां स्तुतिनिन्दाव्याख्याविनियोगग्रन्थो ब्राह्मणम् । ऋग्यजुः सामवेदास्त्रयी आथर्वणश्चतुरीयः । अर्थात्-ऋग्यजुः साम-अथर्व चत्वारोवेदाः । चत्वारो उपवेदाः । शिक्षा, कल्पो व्याकरणं, निरुक्तं, छन्दः ज्योतिषञ्च षड् वेदाङ्गानि, पुराणम्, आन्विक्षिकी, मीमांसा, स्मृतितन्त्रमादयाः अष्टादशविद्या। पुनः काव्यम् तत्र दृश्यंश्रव्यञ्च। दृश्ये - नाटकम्, प्रकरणम्, भाणः, व्यायोगः समवकारः डिमः ईहामृगः, अङ्कः, विधिः प्रहसनम् । श्रव्ये - रामायणम् शिशुपालवधादयः । एतानि सम्मिल्य वाङ्मयुत्वेन ज्ञायन्ते।' वाङ्मये शास्त्राणि काव्यानि वा स्युः। सर्व सम्वादमाश्रितः । सर्वत्र सम्वादमाध्यमेन कथ्यं प्रस्तुतं वर्तते। येन कथनस्य विषयवस्तोश्चोपस्थापनं स्पष्टीकरणं च समाजिकानां कृते सरलं सहजं ग्राहयं च वर्तते । सम्वादमाध्यमेन प्रेषकः अभिग्राहकश्च सारल्यमनुभूयते।इत्युक्ते शिक्षणाधिगमप्रक्रियायां सम्वादः प्रमुखविधि रुपेणशिक्षाशास्त्रिणा अङ्गीकृतः।

जिज्ञासा मानवस्य प्रकृतिः अस्ति। जनाः स्वप्रकृत्या प्रकृतिमवगन्तुम् उद्यतः। अनेन क्रमेण शिक्षणाधिमस्य विविधानामुपकारणानां विधीनां च अन्वेषणमाभिज्ञानञ्च जातम्।शिक्षणाधिगमप्रक्रियायां द्वयोःः जनयोः मध्ये परस्परम् अनुभवस्यआदानप्रदानं भवति। अनुभवस्य आदानप्रदानं सरलरीत्या कथं भवेदीति अनुश्रित्य शिक्षणविधीनामङ्गीकारः भवति। शिक्षणाधिगमस्य विधिषु सम्वादविधिः स्थानं प्रमुखं भजति ।

संवादः मुख्यतः व्यक्तयोः द्वययोः व्यक्तिसमूहयोः समूहसमूहयोः मध्ये वा समस्या समाधानाय, उद्गाराभिव्यक्तये आत्मविकासाय सौहार्दस्थापनाय रहस्योद्घ्घाटनाय वा भवति । संवादे कथोपकथनं परिप्रश्नं प्रश्नोत्तरमपि भवति। सम्वादः एषः शिक्षकविद्घ्यार्थिनो शिक्षकयोः विद्यार्थिनोः मध्ये वा भवति। प्राचीनभारतीयशिक्षापद्धतौ संवादः ज्ञानार्जनाय ज्ञानप्रदानाय च भवति स्म। अधीतज्ञानपरीक्षणाय अपि यदा अस्य प्रयोगः भवति स्म तदा शास्त्रार्थनाम्ना ज्ञायते । संवादः यदा कक्ष्यायां भवति तर्हि विद्यार्थिनः आत्मविश्वासो वर्धते, अभिव्यक्तिक्षमतायां वृद्धिः भवति, नूतन-ज्ञानस्य सर्जनं भवति, शिक्षणाधिगमे रुचिः जागर्ति विषयावबोधोऽपि सद्यः भवति ।

संवादः शिक्षणाधिगमप्रक्रियायाः महत्त्वपूर्णो घटकः भवति। अस्य संवादात्मिकासमावेशीप्रकृतिः समीक्षण प्रवृतिं प्रोन्नयति । छात्राणाम् अभिव्यक्तये तथ्यान् अधिगन्तुं च वर्धयति । मुक्त संचारसहयोगाभ्याम्मञ्चं प्रदाय समग्राधिगन्तुं समृद्धि प्रयच्छति। सकारात्मकमाकषर्कम् अधिगमाय परिस्थितिनिर्माणञ्चकरोति। यत्र-परस्परान्तक्रिया, समूहपरियोजनासहयोगात्मकं शिक्षणं, ऑनलाईन इति आभासीमञ्च अभिभावकशिक्षकसम्मेलनं सहाय्यं च प्रयच्छति । सहैव - अन्तःक्रिया अधिगमं (Interactive learning) परस्परसम्मानं (Mutual Respect), रचनात्मकप्रक्रिया (Constructive Feedback), आलोचनात्मक चिन्तनं (Critical Thinking), सहानुभूति (Empathy) च विकासयति।

सम्यक्द सम्वादाय ध्यातव्यबिन्दवः चत्वारः सन्ति पुनः तेषाम् उपबिन्दघ्वोऽपिसन्ति। यथा-

संरक्षणं समालोचनं चौव ।
सहघ्योगात्मकम्सर्जनं तथा।।

इत्युक्ते स-चतुष्टयं संकेतितं भवति ।

संरक्षणम् (Caring) इत्यत्र-
-अवधानपूर्वकं सहानुभूतिपूर्वकं च परस्परं श्रोतव्यम् ।
- प्रत्येकस्य कृते वाचनाय (अभिव्यक्तये) समयो देयः ।
-विषयः अवधेयः।

समालोचनात्मकम् (Critical) इत्यत्र -
- ऊहः आहवानं स्वविचारश्च
- सम्यक् साक्ष्यम् उदाहरणं प्रदानं च।
- तर्कपूर्णरूपेण निष्कर्षं प्रतिगमनम्।

सहघ्योगात्मकम् (Collaborative) इत्यत्र -
- स्वविचाराणाम् उपस्थापनं स्पष्टीकरणञ्च।
-स्वविचारान् प्रति प्रत्येकंविचाराभिक्तये अवसरो देयः।
- प्रत्येकेषु मतेषु विचारप्रदानम्।

सर्जनात्मकम् (Creative) इत्यत्र -
- अन्येषु विन्दुषु परिचर्चा।
-विचारान् अनुभवेन सह संयोजनम्।
- उदाहरणतुलनयोःप्राप्तिः।

उक्तप्रक्रियया कक्षा-कक्षे शिक्षणाधिगमे च सम्वादस्य प्रकरणेषु संचालनं भवति। येन विद्यार्थिषु अधिगमः स्वल्पसमये, सम्यकतया दृढ़ः भवति। एतेषां सर्वेषामाधारः व्यक्तीनां परस्परव्यवहारः। ततः भारतीयवाङ्मयेसंवादस्यदृढाधारः वर्तते। क्रमेण विवरणंसंक्षिप्तं दीयतेऽत्र ।

वेदे सम्वादः - वेदेषु प्राचीनतमवेदः ऋग्वेदः । यत्र प्रायशः बहवः सम्वादाः सन्ति । यथा- इन्द्रमरुत् , इन्द्र-अगस्त, अगस्त-लोपामुद्रा, विश्वामित्र-नदी, इन्द्र-अदिति-वामदेव, इन्द्र-वरुण, भार्गव-इन्द्र, यम-यमी, इन्द्र-इन्द्राणि, पुरुर्वा- ऊर्वसी, सरमा-पणि, इन्द्र- अग्निः आदयः संवादाः प्राप्यन्ते । उपनिषत्सुसंवादः-कठोपनिषदि नचिकेता-यमः प्रसिद्ध संवादे आत्मनः गुढ़रहस्यं विवेचयति। बृहदारण्यकोपनिषदि-याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवादः, मुण्डकोपनिषदि-अङ्गिरस-शौनक संवादः, केनोपनिषदि-गुरुशिष्य सम्वादः प्रश्नोपनिषदि ऋषिपिप्पलाद-सुकेशादयः सम्वादः, तैतिरीयोपनिषघ्दि बहवः संवादः प्राप्यन्ते । अनेन वेदेषु उपनिषत्सुऋषिणां मुनीनां देवीनां देवतानां मध्ये ज्ञान-विज्ञाने आत्म-परमात्मइत्यादिषुविविधेषुविषयेषु संवादः वर्तते।

महाकाव्येषु-रामायण-महाभारतयो बहवः सम्वादः प्राप्यन्ते। इत्युक्ते रामायणे प्रसिद्धः सम्वादः कैकयी-मन्थरा, राम-सीता, राम-निषाद, राम-भरत, हनुमान-सीता, रावण-अंगद, राम-लक्ष्मण' आदयाः । तथैव रामायणाधृत्सुकाव्येष्वपि संवादस्य प्रामुख्यता वर्तते । महाभारतमपि संवादघ्प्रधानम् अस्ति । यथा-द्रौपदी-धृत्यराष्ट्र, कृष्ण -अर्जुन, युधिष्ठिर-यक्ष, कर्ण-कृष्णादयाः विविधाः संवादाःसन्ति । ततः परिवर्तिकाव्येष्वपि संवादस्य प्राधान्यम् अस्ति। पुनः नाटकं तु संवादनाम्ना एव प्रसिद्धं तत्र तु विषयस्य अग्रसारणं सम्वादमाध्यमेन एव भवति।

अद्यतनीया रचनासु यथा कथा-आख्यायिका, उपन्यासादयेष्वपि संवादस्य आश्रयः विषयवस्तुनः स्थापनाय सम्पादनाय च भवति। चलचित्रमपि सम्वादप्रधानं भवति। एतर्थं बालानां कृते रचितसाहित्येषु यथा- विष्णुशर्मणः पञ्चतंत्रम नारायणपण्डितस्य हितोपदेशः अपि पशुपक्षिणां मध्ये सम्वादानां संकलनम् अस्ति।

येन शिशवः किशोराश्च रुचिपूर्वकं विषयान् अवबोधुं समर्थः भवेयुः। तदाधारेण सम्प्रति विविध- विषयमवलम्ब्य (कॉमिक्स) हास्यकथा, (कार्टून) चलचित्रस्य निर्माणं भवति। अत्र विशिष्य संस्कृतसाहित्यस्य चर्चा अभवत् । परन्तु अन्याषुभाषासुरचितसाहित्येषु संवादस्य प्राधान्यंदृश्यते ।

अतः निष्कर्परूपेणवक्तुं शक्यते यत विस्तृत- प्राचीनेच संस्कृतवाङ्मये (भारतीयवाङ्मये) संवादस्य प्रमुखं स्थानं वर्तते।प्राचीनभारतीय शिक्षापद्धतिःमौखिकी आसीत् । सा पद्धतिः गुरुकुलीयपद्धतिः श्रुति (श्रौत) पद्धति नाम्नाऽपि ख्याता। तत्र प्रायःलौकिकपारलौकिकज्ञानप्रदानग्रहणस्यआधारःसम्वादः इत्युक्तेपरस्परवार्ता, कथोपकथनं, शंकासमाधानम् भवति स्म। विधिरस्य अवलम्बनं वर्तमान समयेऽपि कस्यां नूतनज्ञान सर्जनाय विद्यार्थिषु आत्मविश्वाससम्वर्धनाय, परस्पर विचार-विमर्श सम्पादनाय, स्वविचार प्रसारणाय प्रमाणीकरणाय नूतनप्रकरणेषु स्वमतं तर्कपूर्णरूपेण उपस्थापनाय, सहपाठिनं धैर्यपूर्वकं श्रवणाय तेषां विचाराणां समालोचनपूर्वकंनिष्कर्षानयनाय स्वविकासाय-समूहघ्विकासाय च भवति। संवादः साहित्यस्य एका विधारूपेणापि स्वीक्रियते । परन्तु शिक्षणाधिगम प्रक्रियायां संवादः शिक्षणाधिगमस्य विधिषु प्रमुखविधिरूपेण स्वीकृत्य मया लिखितः । अस्य आधारः राष्ट्रीयाशिक्षानीति 2020 इति अपि मन्यते।

सन्दर्भः

1. राष्ट्रीयाशिक्षानीति 2020।
2. संस्कृत साहित्य परिचय NCERT New Delhi
3. ईशादिनौउपनिषद् ,गीता प्रेस गोरखपुर
4. श्रीमद्भगवद्गीता- गीता प्रेस गोरखपुर
5.वाल्मिकी रामायण, गीता प्रेस गोरखपुर
6. हिन्दी शिक्षण- रमनबिहारी लाल, रस्तोगी प्रकाशनमेरठ
7. slideshare - FARHAIRIA KHALIG. (CU kolhwie)
8.www.OR.annitaa journal.com. IJSR-2020
9. शैक्षिकतकनीकी एवं प्रबन्धन के मूल्य आधार - इन्टर नेशनल १०४. मेरठ
10. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान-मोतीलाल बनारसीदास,

पाठकानां कृते सूचना

कृपया 'संस्कृत-संवादः' पाक्षिकवार्तापत्रस्य ग्राहकत्वं स्वीकर्तुम् आजीवनं सदस्यताशुल्कः- रु. २५००/-, पञ्चवार्षिकशुक्लः रु. ११००/- (संस्थादीनां कृते) द्विवार्षिकशुल्कः रु.४८०/- (व्यक्तीनां कृते) मनिऑर्डरः , चैकः, ड्राफ्टः, इत्यनेन 'संस्कृत-संवाद' इतिनाम्नः सम्पादकीयकार्यालये प्रेषयेयुः। अथवा अस्यां वित्तकोषसंख्यायां (A/C) शुल्कराशिः प्रेषयितुं शक्यते। वित्तकोषविवरणम्

Sanskrit samvad,

Current A/C No. 224902000000142,
Indian Overseas Bank, Yamuna Vihar,
Delhi-110053
IFC Code- IOBA0002249